Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰٓى اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا وَلَا لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ وَلَقَدْ جَآءَكَ مِنْ نَّبَاِى الْمُرْسَلِيْنَ

(सूरत अल् इनाम : **35**)

अनुवाद : और निःसंदेह तुझ से पहले भी रसूल झुठलाए गए थे और उन्होंने इस पर कि वे झुठलाए गए और बहुत सताए गए सब्र किया यहां तक कि उन तक हमारी सहायता आ पहुंची। और अल्लाह के शब्दों को कोई परिवर्तित करने वाला नहीं और निःसंदेह तेरे पास मुर्सलीन की ख़बरें आ चुकी हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 12

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

20 शाबान 1443 हिज्री कमरी, 24 अमान 1401 हिज्री शम्सी, 24 मार्च 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का मदीना से प्रेम

(1885) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत की कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे मेरे अल्लाह! मदीना में दोगुनी बरकत दे, उससे जो तू ने मक्का को दी है।

(1886) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब किसी यात्रा से वापस आते और मदीना की दीवारें देखते तो अपनी ऊंटनी को तेज़ चलाते और अगर किसी और जानवर पर होते तो उसे भी दौड़ाते, मदीना के प्रेम के कारण से।

(1887) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि बनू सलमा ने इरादा किया कि अपनी जगहें छोड़ कर मदीना के क़रीब आ जाऐं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नापसंद किया कि मदीना के किसी तरफ़ जगह ख़ाली रहे

★ और फ़रमाया : हे बनू सलमा! क्या तुम अपने क़दमों का सवाब नहीं चाहते। फिर वह वहीं ठहरे रहे।

★ हज़रत-ए-सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली उल्लाह शाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

ओहद के दामन में दो क़बीले थे। बनू सलमा और बनू हारिसा। प्रत्येक का इलाक़ा दयार बनी सलमा और दयार बनी हारिसा के नाम से प्रसिद्ध था। बनू सलमा ने चाहा कि यसरब की बस्ती के क़रीब आ जाऐं, ताकि नमाज़ों में शामिल होने की आसानी हो परन्तु हिफ़ाज़ती नुक़्ता-ए-नज़र से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनका अपनी बस्तियों में ही रहना पसंद फ़रमाया ।

(सही बुख़ारी, भाग 3 किताब फ़ज़ायल अल् मदीना, मुद्रित 2008 ई.)

मुस्लमानों को चाहिए था किदीवानों की तरह फिरते और तलाश करते कि मसीह अब तक क्यों नहीं आया

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

मुस्लमानों को चाहिए था कि दीवाना-वार फिरते और तलाश करते कि मसीह अब तक क्यों नहीं आया तसलीस परस्ती हद को पहुंच गई है। सच्चे का अपमान और गुस्ताख़ी इंतिहा तक की गई है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क़दर मक्खी और मधुमक्खी जितना नहीं की गई। मधुमक्खी से भी आदमी डरता है और चियूंटी से भी घबराया करता है, परन्तु हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बुरा कहने में कोई नहीं झिझका। كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا के मिस्दाक़ हो रहे हैं। जितना मुख उनका खुल सकता है उन्हों ने खोला और मुँह फाड़ फाड़ कर अप शब्द कहे। अब वह समय सम्भवता आ गया है कि ख़ुदा उनका निवारण करे। ऐसे वक़्त में वह सदैव एक आदमी को पैदा किया करता है وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا वे ऐसे आदमी को पैदा करता है जो उसकी महानता और प्रताप के लिए बहुत ही जोश रखता हो। आन्तरिक सहायता का इस आदमी को सहारा होताहै। वास्तव में सब कुछ ख़ुदा तआला स्वयं करता है, परन्तु उसका पैदा करना एक सुन्नत का पूरा करना होता है। अब वक़्त आगया है। ख़ुदा ने ईसाइयों को क़ुरआन-ए-करीम में नसीहत की थी कि अपने धर्म में ग़ुलू (ऐसी अत्युक्ति जो न बुद्धि के अनुसार ठीक हो न प्राकृतिक हो) न करें पर उन्होंने इस नसीहत पर अमल नहीं किया और पहले वे ضَآلِّيْن थे, अब مُضِلِّيْن भी बन गए। ख़ुदा के पवित्र ग्रन्थों पर नज़र डालने से मालूम होता है कि जब बात हद से गुज़र जाती है तो आसमान पर तैयारी की जाती है। यही उसका निशान है कि यह तैयारी का वक़्त आ गया है। सच्चे नबी, रसूलुल्लाह, मुजद्दिद की बड़ी निशानी यही है कि वह वक़्त पर आवे, ज़रूरत के वक़्त आवे। लोग क़सम खा कर कहें कि क्या यह वक़्त नहीं कि आसमान पर कोई तैयारी हो, परन्तु याद रखो कि ख़ुदा सब कुछ आप करता है। हम और हमारी जमाअत अगर सब के सब कमरों में बैठ जाएँ। तब भी काम हो जाएगा और दज्जाल का ज़वाल आ जाएगा। تِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ (आले इमरान : **141**) उसका कमाल बताता है कि अब उसके ज़वाल का समय है। इस का इर्तिफ़ा ज़ाहिर करता है कि अब वह नीचा देखेगा। उसकी आबादी उसकी बर्बादी का निशान है। हाँ ठंडी हवा

शेष पृष्ठ 8 पर

मोमिन को जल्दी ही अपनी जगह को छोड़ना नहीं चाहिए बल्कि तब्लीग़ करते रहना चाहिए जब तक कि लोग इस हद तक मजबूर न कर दें कि धर्म पर अमल वहां असंभव हो जाए

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरत नहल आयत 42 وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِى اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً की तशरीह में फ़रमाते हैं :

فِى اللّٰهِ इस के अर्थ कई तरह के हो सकते हैं (1) फ़ी जिसका अर्थ लाम हो। इस सूरत में अर्थ ये होंगे कि उन्होंने अल्लाह की ख़ातिर हिज्रत की। इसके अतिरिक्त कोई और उद्देश्य उनका नहीं था।

हदीस में आया है कि हिजरतें कई प्रकार की होती हैं। कोई इन्सान बीवी की ख़ातिर हिज्रत करता है, कोई माल की ख़ातिर, कोई ख़ुदा की ख़ातिर, तो फ़रमाया कि ये वे लोग हैं जो केवल ख़ुदा तआला की ख़ातिर हिज्रत कर रहे हैं। आज दुश्मन एतराज़ करते हैं कि मुस्लमानों ने रुपय की ख़ातिर लड़ाईयां कीं।परोक्ष का ज्ञान रखने वाला ख़ुदा जो जानता था कि ऐसे एतराज़ उसके पाक बंदों पर किए जाऐंगे। उसने लड़ाईयों के शुरू होने से भी पहले इस एतराज़ का उतर दे दिया।

2) इस में मुज़ाफ़ को मुक़द्दर समझा जाये और इबारत इस प्रकार समझी जाए فِى دِيْنِ اللّٰهِ अर्थात वे अल्लाह के दीन की ख़ातिर हिज्रत करते हैं। अर्थात उनकी हिज्रत इस ग़रज़ से है कि मक्का में तो दीन का काम करने की आज़ादी नहीं। अतः वतन छोड़ कर के ऐसी जगह चले जाएं जहां दीन की ख़िदमत करने की आज़ादी हो।

3) फी के वही अर्थ लिए जाएं जो ज़्यादा प्रचलित हैं। इस सूरत में इन शब्दों का यह मतलब होगा कि उन्होंने अल्लाह में हो कर हिज्रत की। अर्थात पूर्णता अल्लाह तआला को अपने पर ढाँक लिया और उसकी सिफ़ात को इख़्तियार कर लिया और अपने नफ़्स को मार कर अपने हर एक काम को ख़ुदा तआला के लिए कर दिया। अतः उनका मक्का से निकलना चंद इन्सानों का निकलना नहीं था बल्कि अल्लाह तआला का मक्का से निकल जाना था। उनके जाने के साथ ही अल्लाह तआला भी मक्का वालों के हाथ से निकल गया।

مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا उनकी हिज्रत बग़ैर किसी वजह के नहीं बल्कि इस लिए है कि लोगों ने उनको वहां रहने नहीं दिया और निकलने पर विवश कर दिया।

इस आयत से इस्तिदलाल होता है कि मोमिन को जल्दी ही अपनी जगह को छोड़ना नहीं चाहिए बल्कि तब्लीग़ करते रहना चाहिए जब तक कि लोग इस हद तक मजबूर न कर दें कि देन पर अमल वहां नामुमकिन हो जाए।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4, पृष्ठ 169 मुद्रित 2010 क़ादियान)

★ ★ ★

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

ख़ुत्बः जुमअः

इब्न-ए-अबी क़हाफ़ा की मिसाल फ़रिश्तों में मीकाईल की भांति है (हदीस)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद सिद्दीक़-ए-अकबर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताएं और गुण

ग़ज़वा-ए-बनू क़ुरैज़ा, सुलह हुदैबिया, सरय्या अबू बकर बनू फ़ज़ारा की तरफ, सरय्या अबू बक़र नजद की तरफ और ग़ज़वा-ए-फ़तह मक्का का वर्णन

देखो उमर! सँभल कर रहो, रसूले ख़ुदा की रिकाब पर जो हाथ तुम ने हाथ रखा है उसे ढीला न होने देना क्योंकि ख़ुदा की क़सम यह व्यक्ति जिसके हाथ में हमने अपना हाथ दिया है बहरहाल सच्चा है (सिद्दीक़-ए-अकब रज़ियल्लाहु अन्हु)

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 04 फ़रवरी 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज कल हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन हो रहा है और कुछ ग़ज़वात का भी वर्णन हुआ था। ग़ज़व-ए-बनू क़ुरैज़ा एक ग़ज़वा था। वाकदी ने ग़ज़वा-ए-बनू क़ुरैज़ा में शामिल लोगों के नाम वर्णन किए हैं जिस के अनुसार क़बीला बनू तीम में से हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत तलहा बिन उबयदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु भी ग़ज़वा-ए-बनू क़ुरैज़ा में शामिल हुए थे।

(किताबुल मग़ाज़ी लिल् वाकदी, भाग 2, पृष्ठ 4 ग़ज़वा बनी कुरेज़ा, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2013 ई.)

अब्दुर्रहमान बिन ग़नम रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बनू क़ुरैज़ा की तरफ़ रवाना हुए तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोग अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दुनियावी ज़ीनत वाले लिबास में देखेंगे तो उनमें इस्लाम क़बूल करने की इच्छा अधिक होगी। अतः आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वह वस्त्र पहने जो हज़रत साद बिन अबादः रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश किया था। अतः आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसे पहनें ताकि मुशरेकीन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ख़ूबसूरत लिबास देखें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं ऐसा करूँगा। अल्लाह की क़सम! अगर तुम दोनों मेरे लिए किसी एक बात पर सहमत हो जाओ तो मैं तुम्हारे मश्वरे के ख़िलाफ़ नहीं करता और मेरे रब ने मेरे लिए तुम्हारी मिसाल ऐसी ही वर्णन की है जैसा कि उसने फ़रिश्तों में से जिब्राईल और मीकाईल की मिसाल वर्णन की है। जहां तक इब्ने ख़त्ताब हैं तो उनकी मिसाल फ़रिश्तों में से जिब्राईल की सी है। अल्लाह ने हर उम्मत को जिब्राईल के द्वारा ही हलाक किया है और उनकी मिसाल नबियों में से हज़रत नूह की तरह है जब उन्होंने कहा رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا (नूह : 27) हे मेरे रब काफ़िरों में से किसी को ज़मीन पर बसा हुआ न रहने दे। और इब्न-ए-अबी क़हाफ़ा की मिसाल फ़रिश्तों में मीकाईल की भांति है अर्तः त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की मिसाल। जब वे मग़फ़िरत तलब करता है तो उन लोगों के लिए जो ज़मीन में हैं और नबियों में इस की मिसाल हज़रत इब्राहीम अ. की तरह है जब उन्होंने कहा فَمَنْ تَبِعَنِيْ فَإِنَّهٗ مِنِّيْ وَمَنْ عَصَانِيْ فَإِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ(इब्राहीम : 37) अतः जिसने मेरी पैरवी की तो वह निःसंदेह मुझ से है और जिसने मेरी ना-फ़रमानी की तो निःसंदेह तू बहुत बख़शने वाला और बार-बार रहम करने वाला है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर तुम दोनों मेरे लिए किसी एक बात पर सहमत हो जाओ तो मैं मश्वरा में तुम दोनों के ख़िलाफ़ नहीं करूँगा। लेकिन तुम दोनों की हालत मश्वरे में कई तरह की है जैसे जिब्राईल और मीकाईल और नूह और इबराहीम अलैहिस्सलाम की मिसाल है। (कंज़ुल उम्माल, भाग 7 पृष्ठ 10 किताब अल् फ़ज़ायल, फ़ज़ाइल अल् सहाबा, रिवायत नंबर 36132 दारुल क़ुतुब इल्मिया 2004 ई.)

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब बनू क़ुरैज़ा का घेराव किया हुआ था तो इस हवाले से एक रिवायत में वर्णित है। आयशा बिंत साद ने अपने पिता से वर्णन किया। वह वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से फ़रमाया। हे साद आगे बढ़ो और उन लोगों पर तीर चलाओ। मैं इस हद तक आगे बढ़ा कि मेरा तीर उन तक पहुंच जाएँ और मेरे पास पच्चास से अधिक तीर थे जो हमने चंद लम्हों में चलाए मानो हमारे तीर टिड्डी दिल की तरह थे। अतः वे लोग अंदर घुस गए और उनमें से कोई भी झांक कर बाहर नहीं देख रहा था। हम अपने तीरों के विषय में डरने लगे कि कहीं वे सारे ही ख़त्म न हो जाएं। अतः हम उनमें से कुछ तीर चलाते और कुछ को अपने पास सुरक्षित रखते।

हज़रत काब बिन अमर और माज़ेनी भी तीर चलाने वालों में से थे। वह कहते हैं कि मैं ने उस दिन जितने तीर मेरे तरकश में थे वह सारे चलाए यहां तक कि जब रात का कुछ हिस्सा गुज़र गया तो हमने उन लोगों पर तीर चलाना बंद कर दिए। वह कहते हैं कि हम तीर-अंदाज़ी कर चुके थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने घोड़े पर सवार थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बिना हथयारों के थे और घुड़सवार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इर्द-गिर्द थे। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें इरशाद फ़रमाया तो हम अपने अपने ठिकानों की तरफ़ लौट आए और हमने रात गुज़ारी। और हमारा खाना वे खजूरें थीं जो हज़रत साद बिन उबादह रज़ियल्लाहु अन्हु ने भेजी थीं और वे खजूरें काफ़ी ज़्यादा थीं। हमने रात उन ख़जूरों में से खाते हुए गुज़ारी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा गया कि वे भी खजूरें खा रहे थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते कि खजूर क्या ही उम्दा खाना है।

(किताबुल मगाज़ी लिल् वाक्त्दी, भाग 2, पृष्ठ 6 ग़ज़वा बनू कुरैज़, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2013 ई.)

हज़रत साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब बनू क़ुरैज़ा के विषय में निर्णय किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी तारीफ़ की और फ़रमाया कि तुमने अल्लाह के हुक्म के अनुसार निर्णय किया है। इस पर हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने दुआ की कि हे अल्लाह अगर तू ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ुरैश के साथ कोई और जंग मुक़द्दर कर रखी है तो मुझे उसके लिए ज़िंदा रख और अगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और क़ुरैश के मध्य जंग का अंत कर दिया है तो मुझे वफ़ात दे दे। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन फ़रमाती हैं कि उनका घाव खुल गया हालाँकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ठीक हो चुके थे और उस घाव का मामूली निशान बाक़ी रह गया था और वह अपने ख़ेमे में वापस आ गए जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके लिए लगवाया था। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

तुम तीन हज़ार तीर-अंदाज़ हो या तीस हज़ार मुझे तुम्हारी कोई पर्वा नहीं, और हे मश्रिक़ो मेरी इस दिलेरी को देखकर कहीं मुझे ख़ुदा न समझ लेना मैं एक इन्सान हूँ और तुम्हारे सरदार अब्दुल मुत्लिब का पुत्र अर्थात पोता हूँ (हदीस)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद सिद्दीक़-ए-अकबर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताएं और गुण

ग़ज़वा-ए-हुनैन, ग़ज़वा-ए-तायफ और ग़ज़वा-ए-तबूक का वर्णन

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ग़ज़व-ए-तबूक के अवसर पर अपना जो समस्त धन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में प्रस्तुत किया था उस की मालियत चार हज़ार दिरहम थी

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 11 फ़रवरी 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

इतिहास में फ़तह मक्का के हवाले से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की एक स्वप्न का वर्णन मिलता है। इस लिए वर्णन हुआ है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में अपना स्वप्न वर्णन करते हुए निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे स्वप्न दिखाया गया है और मैं ने स्वप्न में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा कि हम मक्का के क़रीब हो गए हैं। अतः एक कुतिया भौंकते हुए हमारी तरफ़ आई फिर जब हम उसके क़रीब हुए तो वह पीठ के बल लेट गई और उससे दूध बहने लगा। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उनका उपद्रव दूर हो गया और नफ़ा क़रीब हो गया। वह तुम्हारी क़राबतदारी का वास्ता देकर तुम्हारी पनाह में आएँगे और तुम उनमें से कुछ से मिलने वाले हो। यह ताबीर फ़रमाई आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यदि तुम अबूसुफ़ियान को पाओ तो उसे क़तल ना करना।

इस लिए मुस्लमानों ने अबूसुफ़ियान और हकीम बिन हिज़ाम को मर्रुज़ोहरान के स्थान पर पा लिया।

(दलायल अन्नबवः लिल्बहीकी, भाग 5 पृष्ठ 48 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान,1988 ई.)

इब्न-ए-उक्बा वर्णन करते हैं कि जब अबूसुफ़ियान और हकीम बिन हिज़ाम वापस जा रहे थे तो हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे अबूसुफ़ियान के इस्लाम के बारे में संदेह है। यह वर्णन विस्तार से पहले भी हो चुका है कि किस तरह अबूसुफ़ियान ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इताअत क़बूल की थी और इस्लाम की बरतरी का इक़रार किया था। बहरहाल हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि उसे वापस बुला लें यहां तक कि वह इस्लाम को समझ ले और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ अल्लाह के लश्करों को देख ले। एक दूसरी रिवायत में इब्न-ए-अबी शेबा रिवायत करते हैं कि जब अबूसुफ़ियान वापस जाने लगा तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अबू सूफ़ियान के बारे में हुक्म दें तो उसको रास्ता में रोक लिया जाए। एक दूसरी रिवायत में इब्ने इसहाक़ वर्णन करते हैं कि जब अबूसुफ़ियान वापस जा रहा था तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया इस अर्थात अबूसुफ़ियान को वादी की घाटी में रोक लो। इस लिए हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने अबूसुफ़ियान को जा लिया और रोक लिया। इस पर अबूसुफ़ियान ने कहा हे बनी हाशिम क्या तुम धोखा देते हो? हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: नबी धोखा नहीं देते। एक और रिवायत के अनुसार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा कि हम कदापि धोखा देने वाले नहीं जबकि तू सुबह तक इंतिज़ार कर यहां तक कि तू अल्लाह के लश्कर को देखे और उस को देखे जो अल्लाह ने मुशरिकों के लिए तैयार किया है। इस लिए हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने अबू सुफ़ियान को इस घाटी में रोके रखा यहां तक कि सुबह हो गई।

(उद्धरित स्बलुल हुदा, भाग 5 पृष्ठ 218 فی غزوۃ الفتح الاعظم...., दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान, 1993 ई.)

जब इस्लामी लश्कर अबू सुफ़ियान के सामने से गुज़र रहा था तो इसका वर्णन करते हुए سُبُلُ الْهُدٰى وَالرَّشَاد में लिखा है कि अबू सुफ़ियान के सामने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सब्ज़पोश दस्ता प्रकट हुआ जिसमें मुहाजिरीन और अंसार थे और इस में झंडे और पर्चम थे। अंसार के हर क़बीले के पास एक पर्चम और झंडा था और वे लोहे से ढके हुए थे अर्थात ज़िरह इत्यादि जंगी लिबास में मलबूस थे। उनकी केवल आँखें दिखाई देती थीं। उनमें गाहे-बा-गाहे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ऊंची आवाज़ बुलंद होती थी। वे कहते थे आहिस्ता चलो ताकि तुम्हारा पहला हिस्सा आख़िरी हिस्सा के साथ मिल जाए। कहा जाता है कि इस दस्ता में एक हज़ार ज़िरह पोश थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना झंडा हज़रत साद बिन उबादाह रज़ियल्लाहु अन्हो को अता फ़रमाया और वे लश्कर के आगे आगे थे। जब हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु अबू सुफ़ियान के पास पहुंचे तो उन्होंने अबू सुफ़ियान को पुकार कर कहा आज का दिन रक्त बहाने का दिन है। आज के दिन हुर्मत वाली चीज़ों की हुर्मत हलाल कर दी जाएगी। आज के दिन क़ुरैश अपमानित हो जाऐंगे। इस पर अबूसुफ़ियान ने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा। हे अब्बास आज मेरी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा तुम पर है। इसके बाद अन्य क़बायल वहां से गुज़रे और इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उपस्थित हुए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी ऊंटनी किसवा पर सवार थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हो के मध्य इन दोनों से बातें करते हुए तशरीफ़ ला रहे थे। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने अबूसुफ़ियान से कहा यह हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम।

(सब्लुल हुदा भाग 5 पृष्ठ 220-221 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान, 1993 ई.)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़तह मक्का के अवसर पर मक्का में दाख़िल हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने देखा कि औरतें घोड़ों के मुहं पर अपने दुपट्टे मार मार कर उनको पीछे हटा रही थीं। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्कुराते हुए

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ देखा और फ़रमाया अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो! हस्सान बिन साबित ने क्या कहा है इस लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने वे अशआर पढ़े कि

عَدِمتُ بُنَيَّتِي إِن لَم تَرَوْهَا تُثِيرُ النَّقعَ موعدها كَدَاءُ
يُنَازِعنَ الأَعِنَّةَ مُسرِجَاتٍ يُلَطِّمُهُنَّ بِالخُمُرِ النِّسَاءُ

कि मैं अपनी प्यारी बेटी को खो दूं अगर तुम ऐसे लश्करों को ग़ुबार उड़ाते हुए न देखो जिनके वादों की जगह कुदा पहाड़ है। वो तेज़-रफ़्तार घोड़े अपनी लगामों को खींच रहे हैं। औरतें उन्हें अपनी ओढ़नियों से मार रही हैं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इस शहर में वहां से दाख़िल हो जहां से हस्सान ने कहा अर्थात कुदा के स्थान से।

(सब्लुल हुदा वर्शिाद फ़ी सीरत जीवनी खयरुल आबाद, भाग 5 पृष्ठ 227 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान, 1993 ई.) (शरह ज़रक़ानी, भाग 3 पृष्ठ 415 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान, 1996 ई.)

कदा इरफ़ात का दूसरा नाम है। एक पहाड़ी रास्ता है जो बैरून मक्का से अंदरून मक्का को उतरता है। फ़तह मक्का के अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यहीं से मक्का में दाख़िल हुए थे।

(फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 242 ज़व्वार अकैडमी कराची 2003 ई.)

फ़तह मक्का के अवसर पर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अमन का ऐलान फ़रमाया तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अबूसुफ़ियान शरफ़ को पसंद करता है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो अबूसुफ़ियान के घर में दाख़िल हो जाएगा वह भी अमन में रहेगा। (शरह ज़र्क़ानी अलल मवाहेबुल दुनिया, भाग 3 पृष्ठ 421 बाब ग़ज़वा अल् फ़तह आज़म, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

मक्का फ़तह करने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुबल बुत के बारे में हुक्म दिया। इस लिए वह गिरा दिया गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके पास खड़े थे। इस पर हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हो ने अबूसुफ़ियान से कहा। हे अबूसुफ़ियान हुबल को गिरा दिया गया है हालाँकि तो ग़ज़वा-ए-अहद के दिन इसके विषय में बहुत ग़रूर में था जब तू ने ऐलान किया था कि उसने तुम लोगों पर इनाम किया है। इस पर अबूसुफ़ियान ने कहा हे अव्वाम के बेटे इन बातों को अब जाने दो क्योंकि मैं जान चुका हूँ कि अगर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ुदा के इलावा भी कोई ख़ुदा होता तो जो आज हुआ वह न होता।

इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ाना काबा के एक कोने में बैठ गए और लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इर्द-गिर्द जमा थे। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़तह मक्का के दिन तशरीफ़ फ़र्मा थे और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो तलवार सोंते आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिर पर अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिरहाने खड़े थे।

(सब्लुल हुदा भाग 5 पृष्ठ 235 فی غزوۃ الفتح الاعظم, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान, 1993 ई.)

ग़ज़वा-ए-हुनैन के बारे में वर्णन मिलता है कि ग़ज़वा-ए-हुनैन जिसका दूसरा नाम ग़ज़वा हवाज़न और सकीफ़ है तथा ग़ज़वा ओतास भी कहते हैं। हुनैन मक्का मुकर्रमा और तायफ के मध्य मक्का से तीस मील की दूरी पर स्थित एक घाटी है। ग़ज़वा-ए-हुनैन शवाल आठ हिज्री में फ़तह मक्का के बाद हुआ था। वर्णन हुआ है कि जब अल्लाह तआला ने अपने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ पर मक्का फ़तह करा दिया तो हवाज़िन के सरदार और सक़ीफ़ एक दूसरे से मिले और ये लोग डर रहे थे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनसे भी लड़ाई करेंगे। (सीरतुल हल्बिया भाग 3 बाब ज़िकर मुग़ाज़िया ग़ज़वा हुनैन, पृष्ठ 151 दारुल क़ुतुब इल्मिया 2002 ई.) (एटलस सीरत नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पृष्ठ 409 दारुस्सलाम रियाज़ 1424)

मालिक बिन औफ़ नसरी ने क़बायल अरब को जमा किया। इसलिए उसके पास हवाज़िन के साथ बनू सक़ीफ़ और बनू नसर और बनू जुशम और साद बिन बक्र और चंद लोग बनू हलाल में से जमा हो गए।

(सीरत इब्ने हिशाम, पृष्ठ 761 दारुल क़ुतुब इल्मिया 2001 ई.)

ये सब लोग औतास के मुक़ाम पर जमा हो गए। औतास हुनैन के क़रीब एक वादी है। मालिक बिन औफ़ ने अपने जासूस रवाना किए ताकि ये लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विषय में ख़बर लाएंगे। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके इकट्ठे होने की ख़बर सुनी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने अस्हाब में से एक व्यक्ति अब्दुल्लाह बिन अबू हदरद असलमी को उनकी तरफ़ ख़बरें मालूम करने के लिए भेजा ताकि उनकी भी ख़बर लाएं। इस के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हौज़न के मुक़ाबले के लिए कूच का निर्णय किया और जंग के लिए सफ़वान बिन उमय्या और अपने चचाज़ाद भाई नौफ़ल बिन हारिस से हथियार उधार लिए। इस तरह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बारह हज़ार के लश्कर के साथ बनू हौज़ान से मुक़ाबला के लिए निकले और सुबह सुबह हुनैन के स्थान पर पहुंचे और वादी में दाख़िल हो गए। मुशरेकीन का लश्कर इस वादी की घाटियों में पहले से छिपा हुआ था। उन्होंने मुस्लमानों पर अचानक हमला कर दिया और इतनी शिद्दत से तीर मारे कि मुस्लमान पलट कर भागे और बिखर गए जिसकी वजह से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास केवल कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु रह गए जिनमें हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो भी शामिल थे।(उद्धरित सीरत हल्बिया 3 पृष्ठ 151से 154 बाब वर्णन मुग़ाज़िया, ग़ज़वा हुनैन दारुल क़ुतुब इल्मिया 2002 ई.) (फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 49 ज़वार अकैडमी कराची 2003 ई.)

अबू इसहाक़ से रिवायत है कि एक व्यक्ति बरा के पास आया और कहा तुम लोग हुनैन के दिन पीठ दुखा गए थे। उन्होंने कहा मैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में गवाही देता हूँ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पीठ नहीं दिखाई थी लेकिन जल्दबाज़ और बग़ैर हथियारों के लोग हौज़ान क़बीला की तरफ़ गए और वह तीर-अंदाज़ क़ौम थी। उन्होंने ऐसे तीरों की बारिश की मानो टिड्डी दल है। जिसके नतीजा में वे अपनी जगहें छोड़ गए।

(सही मुस्लिम, किताब जिहाद वस्सेर, बाब फ़ी ग़ज़व हुनेन हदीस 4616)

ऐसे हालात में मुहाजिरीन में से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ साबित-क़दम रहे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहल-ए-बैत में से हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्लिब रज़ियल्लाहु अन्हु और आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचाज़ाद अबूसुफ़ियान बिन हारिस और उनका बेटा, हज़रत फ़ज़ल बिन अब्बास और रबीह बिन हारिस, उसामा बिन ज़ैद का वर्णन मिलता है कि ये साथ थे। (अल् सीरतुल नब्विय्या लेइब्ने हश शाम पृष्ठ 764 ग़ज़वा हुनैन ثبات الرسول وبعض اصحابه, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

हज़रत अबू कतादा रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि जब हुनैन का वक़्त था तो मैंने मुस्लमानों में से एक व्यक्ति को देखा कि वह एक मुशरिक व्यक्ति से लड़ रहा है और एक और मुशरिक है जो धोखा देकर चुपके से उस के पीछे से उस पर हमला करना चाहता है कि उस को क़तल कर दे। तो मैं जल्दी से उस की तरफ़ बढ़ा जो इस तरह धोखे से एक मुस्लमान से झपटना चाहता था। उसने मुझे मारने के लिए हाथ उठाया और मैंने उसके हाथ पर वार किया और हाथ को काट दिया। फिर उसने मुझे पकड़ लिया और उसने मुझे ज़ोर से भींचा यहां तक कि मैं बेबस हो गया। फिर उसने मुझे छोड़ दिया। वह ढीला पड़ गया और मैंने उसको धोखा दिया। फिर मैंने उसको मार डाला। इधर यह हाल हुआ कि मुस्लमान शिकस्त खा कर भाग गए। मैं भी उनके साथ भाग गया। कहते हैं कि फिर लोग लौट कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जमा होने शुरू हो गए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो व्यक्ति किसी मक़्तूल के विषय में यह सबूत पेश कर दे कि उसने उसको क़तल किया है तो इस मृतक का सामान उसके क़ातिल का होगा। मैं उठा

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

ताकि अपने मृतक के विषय में कोई शहादत ढूंडूं परन्तु किसी को नहीं देखा जो मेरे लिए गवाही दे और मैं बैठ गया। फिर मुझे ख़्याल आया और मैंने इस मृतक का वाक़िया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वर्णन किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ बैठे हुए एक व्यक्ति ने कहा कि इस मृतक के हथियार जिसका ये वर्णन करते हैं मेरे पास हैं। उस व्यक्ति ने अर्थात जिसके पास ये हथियार थे कहा कि इन हथियारों के बजाय आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसको कुछ और देकर राज़ी कर लें। अर्थात कहते हैं कि जो सामान मेरे पास है वह मेरे पास ही रहने दें और उन्हें कुछ और दे दें। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो वहां बैठे थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा ऐसा कदापि नहीं हो सकता। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ुरैश के एक बुज़दिल को तो सामान दिला दें और अल्लाह के शेरों में से एक शेर को छोड़ दें जो अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से लड़ रहा है। हज़रत अबू कतादा रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े हुए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वह सामान मुझे दिला दिया। मैंने उस से ख़जूरों का एक बाग़ ख़रीद लिया और यह पहला माल था जो मैंने इस्लाम में बतौर जायदाद बनाया।

(सही बुख़ारी, किताबुल मगाज़ी, بَابُ قَوْلِ اللّٰهِ تَعَالٰى وَيَوْمَ حُنَيْنٍ हदीस 4322)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि देखो तारीख़ से पता लगता है कि जंग हुनैन के अवसर पर जब मक्का के काफ़िर लश्कर इस्लाम में यह कहते हुए शामिल हो गए कि आज हम अपनी बहादुरी के जोहर दिखाएँगे और फिर बनू सक़ीफ़ के हमला की ताब न ला कर मैदान-ए-जंग से भागे तो एक वक़्त ऐसा आया कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गर्द केवल बारह सहाबी रह गए। इस्लामी लश्कर जो दस हज़ार की संख्या में था उस में भगदड मच गई। कुफ़्फ़ार का लश्कर जो तीन हज़ार तीर अंदाज़ों पर मुश्तमिल था आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दाएं बाएं पहाड़ों पर चढ़ा हुआ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर तीर बरसा रहा था परन्तु उस वक़्त भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पीछे नहीं हटना चाहते थे बल्कि आगे जाना चाहते थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने घबरा कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सवारी की लगाम पकड़ ली और अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरी जान आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर क़ुर्बान हो यह आगे बढ़ने का वक़्त नहीं है। अभी लश्कर-ए-इस्लाम जमा हो जाएगा तो फिर हम आगे बढ़ेंगे परन्तु आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बड़े जोश से फ़रमाया कि मेरी सवारी की बाग छोड़ दो और फिर ऐड़ लगाते हुए आगे बढ़े और यह कहते जाते थे कि اَنَا النَّبِيُّ لَا كَذِبْ اَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبْ। अर्थात मैं मौऊद नबी हूँ जिसकी हिफ़ाज़त का दाइमी वादा है। झूठा नहीं हूँ। इसलिए तुम तीन हज़ार तीर-अंदाज़ हो या तीस हज़ार मुझे तुम्हारी कोई पर्वा नहीं।

और मश्रिक़ो! मेरी इस दिलेरी को देखकर कहीं मुझे ख़ुदा न समझ लेना मैं एक इन्सान हूँ और तुम्हारे सरदार अब्दुल मुत्लिब का पुत्र अर्थात पोता हूँ।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की आवाज़ बहुत ऊंची थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी तरफ़ देखा और फ़रमाया अब्बास! आगे आओ और आवाज़ दो और बुलंद आवाज़ से पुकारो कि हे सूरत बकरः के सहाबियों! अर्थात जिन्हों ने सूरत बक़रः याद की हुई है हे हुदैबिया के दिन दरख़्त के नीचे बैअत करने वालो! ख़ुदा का रसूलुल्लाह तुम्हें बुलाता है।

एक सहाबी कहते हैं कि मक्का के ताज़ा नए मुस्लिमों की बुज़दिली की वजह से जब इस्लामी लश्कर का अगला हिस्सा पीछे की तरफ़ भागा तो हमारी सवारियां भी दौड़ पढ़ीं और जितना हम रोकते थे उतना ही वे पीछे की तरफ़ भागती थीं। यहां तक कि अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की आवाज़ मैदान में गूँजने लगी कि हे सूरत बक़रः के सहाबियों हे हुदैबिया के दिन दरख़्त के नीचे बैअत करने वालो! ख़ुदा का रसूलुल्लाह तुम्हें बुलाता है। कहते हैं यह आवाज़ जब मेरे कान में पड़ी तो मुझे यूं मालूम हुआ कि मैं ज़िंदा नहीं बल्कि मुर्दा हूँ और उस की आवाज़ हवा में गूंज रही है। मैंने अपने ऊंट की लगाम ज़ोर से खींची और उस का सिर पीठ से लग गया लेकिन वह इतना बिदका हुआ था कि जूंही मैंने लगाम ढीली की वह फिर पीछे की तरफ़ दौड़ा। इस पर मैंने और बहुत से साथियों ने तलवारें निकाल लें और कई तो ऊंटों पर से कूद गए और कई ने ऊंटों की गर्दनें काट दीं और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ दौड़ना शुरू कर दिया और चंद लम्हों में ही वे दस हज़ार सहाबा का लश्कर जो बे-इख़्तियार मक्का की तरफ़ भागा जा रहा था आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गर्द जमा हो गया और थोड़ी देर में पहाड़ियों पर चढ़ कर उसने दुश्मन को तहस नहस कर दिया और यह ख़तरनाक शिकस्त एक महान फ़तह की सूरत में बदल गई।

(उद्धरित तफ़सीर कबीर भाग 6 पृष्ठ 409-410)

ग़ज़वा-ए-तायफ, तायफ मक्का से पूर्व की जानिब तक़रीबन नब्बे किलो मीटर पर एक प्रसिद्ध शहर है और हिजाज़ का पहाड़ी शहर है। यहां अंगूर और दूसरे फल बकसरत होते थे। इस जगह बनू सक़ीफ़ आबाद थे।

(सीरत, पृष्ठ 178 ज़व्वार अकैडमी कराची 2003 ई.)

ग़ज़वा-ए-तायफ के बारे में आता है कि हौज़ान और सक़ीफ़ के पहले से पराजय लोग अपने सरदार मलिक बन औफ़ नसरी के साथ भाग कर तायफ आए थे और यहीं क़िला बंद हो गए थे। इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुनैन से फ़ारिग़ हो कर और जेरान में माल-ए-ग़नीमत जमा करवा कर तक़सीम फ़रमाया और इसी महीने शवाल आठ हिज्री में तायफ का क़सद फ़रमाया।

(अल् रहीकुल मख्तूम, पृष्ठ 567 अल् मक्तबा सल्फिया लाहौर)

जेरान मक्का और तायफ के मार्ग पर मक्का के क़रीब एक कुएं का नाम है। मक्का से इस की दूरी सत्ताईस किलो मीटर थी। (फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 88 ज़व्वार अकैडमी कराची 2003 ई.)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तायफ का कितने रोज़ घेराव किया था इस बारे में असंख्य रिवायत मिलती हैं। कुछ कहते हैं दस से कुछ ज़ायद रातें घेराव किया। कुछ कहते हैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बीस से कुछ अधिक रातें घेराव किया। यह भी कहा जाता है कि बीस दिन घेराव किया। एक रिवायत में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीस के क़रीब रातें तायफ वालों का घेराव किया।

(उद्धरित सब्लुल हुदा वर्रिशाद, भाग 5 पृष्ठ 388 फ़ी ग़ज़वा अलतायफ़, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

इब्ने हश्शाम कहते हैं कि यह भी कहा जाता है कि सतरह रातें घेराव किया। (अल् सीरतुल नब्विय्या ले इब्ने हश्शाम, पृष्ठ 792 वर्णन ذكر غزوة الطائف بعد حُنَين, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

सही मुस्लिम में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि हमने चालीस रातों तक उनका घेराव किया।

(सही मुस्लिम, किताब ज़कात, باب اعطاء المؤلفة قلوبهم على الاسلام ,हदीस नंबर 2442)

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तायफ में सक़ीफ़ का घेराव कर रखा था तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया हे अबू बकर मैं ने स्वप्न में देखा है कि मुझे मक्खन से भरा हुआ एक पियाला पेश किया गया परन्तु एक मुर्ग़ ने ठूंगा मारा तो इस प्याले में जो कुछ था सब बह गया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैं नहीं समझता कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आज के दिन उनसे जिस चीज़ का इरादा रखते हैं वह हासिल करलेंगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मैं भी ऐसा ही होता हुआ नहीं देख रहा। इस लिए थोड़ी देर के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि क्या में लोगों में पलायन का ऐलान न कर दूं? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क्यों नहीं तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों में कूच का ऐलान कर दिया। वापस जाने का ऐलान कर दिया। (अल् सीरतुल नब्विय्या ले इब्ने हश्शाम पृष्ठ 793 ज़िक्र ग़ज़वा अलतायफ़ बाद हुनैन, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

ग़ज़ व-ए-तबूक रजब 9 हिज्री में हुआ। इस के बारे में वर्णन है कि तबूक मदीना से शाम की उस राजमार्ग पर स्थित है जो व्यपार के क़ाफ़िलों की आम गुज़रगाह थी और यह वादी अल् कुरा और शाम के मध्य एक शहर है उसे अस्हाबुल एका का शहर

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

भी कहा गया है। इस की तरफ़ हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम अवतरित हुए थे।

(मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 2, पृष्ठ 14 दार सादिर बेरूत 1977 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ग़ज़वा तबूक में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़ज़वा तबूक में बड़ा झंडा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अता फ़रमाया था।

(अल्तबकातुल कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 131131' ابوبکر الصدیق" ومن بنی تیم بن مرّۃ بن کعب, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2017 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ग़ज़वा-ए-तबूक के अवसर पर अपना जो कुल माल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश किया था उसकी मालियत चार हज़ार दिरहम थी।

(शरह जरक़ानी, भाग 4 पृष्ठ 69 सुम्मा ग़ज़वा तबूक दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब सहाबा किराम को ग़ज़ व-ए-तबूक की तैयारी के लिए हुक्म दिया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का और अन्य क़बायल अरब की तरफ़ संदेश भेजा कि वे भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ चलें और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सरदारों को अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने और सवारियां प्रदान करवाने की तहरीक फ़रमाई। अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बात का उन्हें ताकीदी हुक्म दिया और यह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आख़िरी ग़ज़वा है। इसलिए इस अवसर पर जो व्यक्ति सबसे पहले माल लेकर आया वह हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने घर का सारा माल ले आए जो कि चार हज़ार दिरहम था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से दरयाफ़्त फ़रमाया कि अपने घर वालों के लिए भी कुछ छोड़ा है कि नहीं? तो उन्होंने अर्ज़ किया कि घर वालों के लिए अल्लाह और उसका रसूलुल्लाह छोड़ आया हूँ।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो अपने घर का आधा माल ले आए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से दरयाफ़्त किया कि अपने घर वालों के लिए भी कुछ छोड़ के आए हो? तो उन्होंने अर्ज़ किया कि आधा छोड़ के आया हूँ। इस अवसर पर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक सौ ओकिया दिया। यह तक़रीबन चार हज़ार दिरहम बनते हैं। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उस्मान बिन अफ़्फ़ान और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ज़मीन पर अल्लाह तआला के ख़ज़ानों में से ख़ज़ाने हैं जो अल्लाह की रज़ा के लिए ख़र्च करते हैं। उन्होंने बहुत माल दिया। इस अवसर पर औरतों ने भी अपने ज़ेवरात पेश किए और हज़रत आसिम बिन अदि रज़ी. ने सत्तर वसक खजूरें पेश कीं जो तक़रीबन दो सौ बासठ मन के क़रीब बनती हैं।

(सीरतुल हल्बिया भाग 3 पृष्ठ 183-184 ग़ज़वा तबूक, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)(लुग़ातुल हदीस भाग 1 पृष्ठ 82 औक़िया)(लुग़ातुल हदीस, भाग 4 पृष्ठ 487 "वसक" भाग 2 पृष्ठ 648 "साअ")

इसकी चालीस किलो के क़रीब तो एक मन शुमार करें क़रीबन कोई डेढ़ हज़ार एक टन से ऊपर बनती हैं। तक़रीबन डेढ़ टन के क़रीब।

ज़ैद बिन असलम अपने पिता से रिवायत करते हैं कि मैंने हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो को यह कहते हुए सुना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें इरशाद फ़रमाया कि हम सदक़ा करें और इस वक़्त मेरे पास माल था। मैंने कहा आज के दिन मैं अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से सबक़त ले जाऊँगा। अगर मैं उनसे कभी सबक़त ले जा सका तो आज का दिन है। कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा में अपना आधा माल लाया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम अपने घर वालों के लिए किया छोड़ आए हो? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा मैंने अर्ज़ किया कि इतना ही और। जितना लाया हूँ इतना ही घर वालों के लिए छोड़ दिया है। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि वह सब ले आए जो उनके पास था तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे अबू बकर! तुमने अपने घर वालों के लिए क्या छोड़ा? उन्होंने अर्ज़ किया कि मैंने उनके लिए अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को छोड़ा है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं ने कहा। अल्लाह की क़सम! मैं उनसे किसी चीज़ में कभी भी सबक़त नहीं ले जा सकता।

(सुंन अत्तिरमज़ी किताब मनाकिब बाब رجاءہ ان یکون ابوبکر ممن یدعی من جمیع ابواب الجنۃ हदीस 3675)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि एक वह ज़माना था कि इलाही दीन पर लोग अपनी जानों को भेड़ बकरी की तरह निसार करते थे। मालों का तो क्या वर्णन, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक से ज़्यादा दफ़ा अपना समस्त घर-बार निसार किया यहाँ तक कि कोई सुई तक को भी अपने घर में न रखा और ऐसा ही हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी शक्ति और विवेक के अनुसार और उस्मान ने अपनी ताक़त और हैसियत के अनुसार عَلٰی ھٰذَا الْقِیَاسِ عَلٰی قَدْرِ مَرَاتِب समस्त सहाबा अपनी जानों और मालों समेत इस दीन-ए-इलाही पर क़ुर्बान करने के लिए तैयार हो गए। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बैअत करने वालों के बारे में फ़रमाते हैं कि एक वे हैं कि बैअत तो कर जाते हैं और इक़रार भी कर जाते हैं कि हम दुनिया पर दीन को मुक़द्दम करेंगे परन्तु मदद और इमदाद के अवसर पर अपनी जेबों को दबा कर पकड़े रखते हैं। भला ऐसी मुहब्बत दुनिया से कोई दीनी उद्देश्य पा सकता है और क्या ऐसे लोगों का वजूद कुछ भी लाभदायक हो सकता है। कदापि नहीं कदापि नहीं। फिर आप ने फ़रमाया अल्लाह तआला फ़रमाता है कि لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰی تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ कि जब तक माल जो तुम्हें प्यारा है उसको ख़र्च नहीं करोगे उस वक़्त तक तुम्हारी नेकी नेकियां नहीं हैं। (उद्धरित मल्फ़ूज़ात, भाग 6 पृष्ठ 40 हाशिया)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मिल कर एक सहाबी को दफ़न करना, इस बारे में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैं ग़ज़वा-ए-तबूक में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ था कि एक मर्तबा मैं आधी रात के वक़्त उठा तो मैंने लश्कर के एक तरफ़ आग की रोशनी देखी। इसलिए मैं इस की तरफ़ गया कि देखूं कि वह क्या है तो क्या देखता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं और मैंने देखा कि हज़रत अब्दुल्लाह ज़ुल बेजादीन मुज़नी रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ौत हो गए हैं और ये लोग उनकी क़ब्र खोद चुके थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ब्र के अंदर थे जबकि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उनकी मय्यत को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ उतार रहे थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़र्मा रहे थे कि तुम दोनों अपने भाई को मेरे क़रीब करो। अतः इन दोनों ने हज़रत अब्दुल्लाहज़ुल बेजा दीन रज़ियल्लाहु अन्हो की सोहबत को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ उतारा। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें क़ब्र में रख दिया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआ की। اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَمْسَیْتُ رَاضِیًا عَنْہُ فَارْضَ عَنْہُ कि अल्लाह! मैंने इस हाल में शाम की है कि मैं उस से राज़ी था। अतः तू भी उससे राज़ी हो जा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैं ने उस समय तमन्ना की कि काश यह क़ब्र वाला मैं होता।

(सीरत इब्ने हश्शाम, पृष्ठ 822 किताब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम لصاحب ایلۃ., दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2001 ई.)

हज़रत अब्दुल्ला ज़ुलबजा दीन रज़ियल्लाहु अन्हो का सम्बन्ध क़बीला बनू मुज़य्ना् से था। उनके बारे में आता है कि यह अभी छोटे ही थे कि उनके पिता फ़ौत हो गए। उन्हें विरासत में से कुछ नहीं मिला। उनके चचा मालदार थे। इस चचा ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का देख भाल की यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी मालदार हो गए और उन्होंने फ़तह मक्का के बाद इस्लाम क़बूल किया तो उनके चचा ने उनसे सब कुछ ले लिया यहां तक कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का तेबंद भी खींच लिया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पिता आएं और उन्होंने अपनी चादर को दो हिस्सों में तक़सीम किया और हज़रत अब्दुल्लाह

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफ़त का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अः 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक हिस्सा को बतौर तेबंद इस्तिमाल कर लिया और दूसरे हिस्सा को अपने ऊपर ओढ़ लिया। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो मदीना आए और मस्जिद में लेट गए। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सुबह की नमाज़ पढ़ी। यह कहते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सुबह की नमाज़ से फ़ारिग़ होते थे तो लोगों को ग़ौर से देखते थे कि कौन लोग हैं, कोई नया आदमी है? तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ देखा तो उन्हें अजनबी समझा और हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो से पूछा कि तुम कौन हो? हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपना गोत्र वर्णन किया। एक रिवायत में वर्णन है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अर्ज़ की कि मेरा नाम अब्दुल उज्ज़ा है। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम अब्दुल्लाह ज़ुल बेजादीन अर्थात दो चादरों वाले हो। फिर फ़रमाया तुम मेरे क़रीब ही रहा करो। इस लिए यह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मेहमानों में शामिल थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही क़ुरआन-ए-करीम सिखाते थे यहां तक कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बहुत सा क़ुरआन याद कर लिया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऊँची आवाज़ वाले व्यक्ति थे।

(उद्धरित सब्लुल हुदा वर्रिशाद, भाग 5 पृष्ठ 459-460 फ़ी ग़ज़व तबूक, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.) (ओसोदुलग़ाबा, भाग 3 पृष्ठ 229 दारुल क़ुतुब इल्मिया)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की हज के अवसर पर इमारत के बारे में वर्णन है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने 9 हिज्री में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को अमीरुल हज बना कर मक्का रवाना फ़रमाया था। इस बारे में विस्तार यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब तबूक से वापस आए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज का इरादा किया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वर्णन किया गया कि मुशरिकीन दूसरे लोगों के साथ मिलकर हज करते हैं। वहां मुशरेकीन भी होंगे और शिरकिया शब्द भी अदा करते हैं और ख़ाना काबा का नंगे हो कर तवाफ़ करते हैं। यह बात सुनके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस साल हज का इरादा तर्क कर दिया और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को अमीर हज बना कर फ़रमाया।

(रोज़ा अनफ़ फ़ी तफ़सीर सीरतुन नब्विय्या ले इब्ने हश्शाम, حج ابی بکر بالناس سنة تسع,भाग 4 पृष्ठ 318 - 319 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)(उम्दतुल क़ारी, किताबअल्हज, باب لا یطوف بالبیت عریان,भाग 9 पृष्ठ 384 मुद्रितदार अहया अल्तुरास 2003 ई.)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो तीन सौ सहाबा के साथ मदीना से रवाना हुए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके साथ बीस क़ुर्बानी के जानवर भेजे जिनके गले में ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने हाथ से क़ुर्बानी की निशानों के तौर पर ग़ानियाँ पहनाईं और निशान लगाए और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ुद अपने साथ पाँच क़ुर्बानी के जानवर लेकर गए। (सीर्तुल हल्बिया,भाग 3 पृष्ठ 295 बाब سرایه و بعوثه ﷺ/سریه اُسامه بن زید...दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान)

रिवायत में आता है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने सूरत तौबा की आरंभिक आयात का हज के अवसर पर ऐलान किया। यह रिवायत इस तरह है कि अबू जाफ़र मुहम्मद बिन अली से रिवायत है कि जब सूरत बरात, (सूरत तौबा) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को बतौर हज का अमीर भिजवा चुके थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया गया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह सूरत हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ भेज दें ताकि वहां वह पढ़ें तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरे बैत वालों में से किसी व्यक्ति के सिवा कोई यह कर्तव्य मेरी तरफ़ से अदा नहीं कर सकता। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलवाया और उन्हें फ़रमाया कि सूरत तौबा के आरम्भ में जो वर्णन हुआ है उसको ले जाओ और क़ुर्बानी के दिन जब लोग मिना में इकट्ठे हों तो इस में ऐलान कर दो कि जन्नत में कोई काफ़िर दाख़िल नहीं होगा और इस वर्ष के बाद किसी मुशरिक को हज करने की इजाज़त न होगी, न ही किसी को नंगे बदन बैतुल्लाह के तवाफ़ की आज्ञा होगी और जिस किसी के हाथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कोई अनुबंध किया है उसकी मुद्दत पूरी की जाएगी।

हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ऊंटनी पर सवार हो कर रवाना हुए। रास्ते में ही हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से जा मिले। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की मुलाक़ात अर्ज या वादी ज़जनान में हुई। अर्ज मदीना और मक्का के मध्य रास्ते की एक घाटी है यहां क़ाफ़िले पड़ाव करते हैं और ज़जनान मदीना के रास्ते पर मक्का के चारों ओर का क्षेत्र में एक स्थान है जो मक्का से पच्चीस मील की दूरी पर है। बहरहाल जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को रास्ते में देखा तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने तुरंत फ़रमाया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अमीर निर्धारित किया गया है या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे अधीन होंगे? यह विनम्रता की इंतिहा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भेजा है तो क्या अब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अमीर होंगे या मेरे अधीन इस क़ाफ़िले में चलेंगे काम करेंगे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अधीन रहूँगा। फिर दोनों रवाना हुए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने लोगों की हज के विषय पर निगरानी की और इस वर्ष अरब वालों ने अपनी इन्ही जगहों पर पड़ाव किया हुआ था जहां वह ज़माना-ए-जाहिलीयत में पड़ाव किया करते थे।

जब क़ुर्बानी का दिन आया तो हज़रत अली ऊखड़े हुए और लोगों में इस बात का ऐलान किया जिसका रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया था और कहा हे लोगो! जन्नत में कोई काफ़िर दाख़िल नहीं होगा और इस वर्ष के बाद कोई मुशरिक हज नहीं करेगा न ही किसी को नंगे बदन बैतुल्लाह के तवाफ़ की आज्ञा होगी और जिस किसी के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कोई अनुबंध किया है उसकी मुद्दत पूरी की जाएगी और लोगों को इस ऐलान के दिन से चार माह तक की अवधि देता कि हर क़ौम अपने अमन की जगहों या अपने इलाक़ों की तरफ़ लौट जाएं। फिर न किसी मुशरिक के लिए कोई अह्द या अनुबंध होगा और न ज़िम्मेदारी सिवाए इस अह्द या अनुबंध के जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास किसी मुद्दत तक हो। अर्थात जिस अनुबंध की मुद्दत अभी बाक़ी हो तो इस अनुबंध का जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हुआ था उसकी निर्धारित अवधि तक पास किया जाएगा। इन मुआहिदों के अतिरिक्त कोई नया अनुबंध नहीं होगा। फिर इस वर्ष के बाद न किसी मुशरिक ने हज किया और न किसी ने नंगे बदन तवाफ़ किया।

एक रिवायत में आता है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अर्फ़ा के स्थान में आए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों को सम्बोधित किया। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सम्बोधित कर चुके तो मेरी तरफ़ मुतवज्जा हो कर फ़रमाया। हे अली! खड़े हो कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का संदेश पहुँचाओ। अतः मैं खड़ा हो गया और मैं ने उन्हें सूरत बराअत की चालीस आयात सुनाई। फिर वे दोनों हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो गए।

(سیرة ابن هشام، حج ابی بکر بالناس سنة تسع... पृष्ठ 832 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2001 ई.) (सब्लुल हुदा,जल्द 12 पृष्ठ 73 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)(البدایه والنهایه لابن کثیر, भाग 7 पृष्ठ 228-229 1997...ذکر بعث رسول الله ﷺ ابابکر امیرا علی الحج)(मोअज्जमूल बुल्दान, भाग 3 पृष्ठ 515 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)(फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 198 ज़व्वार अकैडमी कराची 2003 ई.)

यह वर्णन अभी चलेगा। इस वक़्त में एक मरहूमा का वर्णन भी करना चाहता हूँ। पिछले दिनों जिनकी वफ़ात हुई है। उनका जनाज़ा भी इंशा अल्लाह

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ
KHALEEL AHMAD
S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पढ़ाऊंगा।आदरणीया अम्तुल लतीफ़ ख़ुरशीद साहिबा। यह कैनेडा में थीं और शेख़ ख़ुरशीद अहमद साहिब मरहूम अस्सिटैंट ऐडीटर अल् फ़ज़ल रब्वाह की पत्नी थीं। पचानवे वर्ष की आयु में पिछले दिनों उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसिया थीं। आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा हज़रत मियां फ़ज़ल मुहम्मद साहिब हर्सिया वाले की पोती, हज़रत हकीम अल्लाह बख़श साहिब मुदर्रिस दरबान डेयोढ़ी हज़रत अम्माँ-जान की नवासी और मुकर्रम मियां अब्दुर्रहीम दियानत साहिब दरवेश क़ादियान और आमना बेग़म साहिबा की बड़ी बेटी थीं। नुसरत गर्लज़ हाई स्कूल क़ादियान से उन्होंने मिडल पास किया। फिर जामिआ में 43 ई. या 44 ई. में दाख़िला लिया। दो साल जामिआ नुसरत में पढ़ा। फिर प्राईवेट पढ़ कर अदीब आलम का इमतिहान पास किया। उनकी शादी शेख़ ख़ुरशीद अहमद साहिब अस्सिटैंट ऐडीटर अलफ़ज़ल से हुई थी जैसा कि मैंने वर्णन किया और उनका निकाह हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने मस्जिद मुबारक में पढ़ा था। अल्लाह तआला ने आपको तीन बेटों और दो बेटीयों से नवाज़ा है। अब्दुल बासित शाहिद साहिब मुरब्बी सिलसिला की बहन थीं जो आजकल यहां हैं और लंदन में भी काम करते रहे हैं। बड़ा अरसा ये बासित साहिब अफ़्रीक़ा में भी रहे। उनके एक पोते व्क़ास अहमद ख़ुरशीद भी अमरीका में मुरब्बी सिलसिला हैं। ये अच्छा इलमी ख़ानदान है। एक बहन उनकी अम्तुल बारी नासिर साहिबा भी हैं वह भी इलमी ख़िदमात अंजाम देती हैं।

अम्तुल लतीफ़ साहिबा ने तेराह वर्ष की उम्र में लजना इमाइल्लाह के मुख़्तलिफ़ ओहदों पर ख़िदमात अदा करनी शुरू कीं और आपकी ख़िदमात का सिलसिला सत्तर वर्ष तक जारी रहा। आपको हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो की हिदायात, हज़रत उम्मुल मोमनीन हज़रत सय्यदा नुसरत जहां बेग़म साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा की सरपरस्ती और मुख़्तलिफ़ बुज़ुर्गों की निगरानी में काम करने की तौफ़ीक़ मिली। क़ादियान में ख़िदमात की तौफ़ीक़ मिली। फिर तक़सीम मुल्क के बाद हज़रत ख़लीफ़ तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत छोटी आपा मरहूमा के इरशाद पर मुहाज्रात की इंचार्ज की हैसियत से ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। इसी तरह मुख़्तलिफ़ हैसियतों से लजना की ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। लंबा अरसा सैक्रेटरी इशाअत भी रहीं। सम्पादक मिसबाह 1979 ई. से 1986 ई. तक रहीं। 1986 ई. से आप कैनेडा मुक़ीम थीं। वहां भी लजना इमाइल्लाह की एज़ाज़ी मुशीर रहीं। तसनीफ़ और इशाअत में तारीख़ लजना इमाइल्लाह की इबतिदाई चार जिल्दें,''अल् मसाबीह' और''अल् अज़्हार' मुरत्तिब करने में भरपूर सहयोग की तौफ़ीक़ पाई। हज़रत छोटी आपा के साथ चवालीस वर्ष काम करने का सौभाग्य मिला। आपके ईमा और निगरानी में नास्रात तुल अहमदिया का सबसे पहला इजतिमा हुआ। अम्तुल लतीफ़ साहिबा जब सैक्रेटरी नास्रात थीं तो अपने अपने पति शेख़ ख़ुरशीद साहिब की मय्यत में "राह ए ईमान'' और'' जमाअत अहमदिया की मुख़्तसर तारीख़' मुरत्तिब कीं।

उनके बेटे लईक अहमद ख़ुरशीद कहते हैं कि माता साहिबा मरहूमा ने अपने घर में समस्त बच्चों को एक गहरा सबक़ यह सिखाया था कि अगर जमाअत या ख़िलाफ़त के ख़िलाफ़ कोई बात हो तो उसे बिल्कुल नहीं सुनना और अगर कान में बात पड़ भी जाए तो इस को बिल्कुल नहीं दोहराना और मुँह पर नहीं लाना चूँकि अल्लाह तआला की ख़ास सहायता जमाअत और ख़िलाफ़त के साथ हैं और उन्होंने कहा कि हर इबतिला और फ़ित्ना के बाद ख़ुदा तआला के निशानात जमाअत के हक़ में ज़ाहिर होते हैं इसलिए तुम लोग बिला-वजह फ़ित्ना में शामिल न हो जाना। फिर लिखा है कि आप जमाअत की एक चलती फिर्ती तारीख़ थीं। बहुत मिलनसार और सब का भला चाहने वाली। ख़ुदा पर विश्वास रखने वाले, ख़िदमत-ए-ख़लक़ का बहुत शौक़ था और बहुत से नए आने वाले मुहाजिर ख़ानदानों को बसाने में सरगर्मी से हिस्सा लेती थीं जो कैनेडा में आते थे।

फिर उनके एक बच्चे ने लिखा है कि हमारी अम्मी जान को ख़िलाफ़त से अत्यधिक प्रेम था। हर समय हम सबको ख़लीफ़ा वक़्त के लिए दुआओं की ताकीद और याददहानी करवाती थीं। नमाज़ों की बे-इंतिहा पाबंद थीं। जुमा का दिन एक ईद का दिन होता था। कुरान-ए-मजीद से इशक़ के बारे में कहती हैं कि बेशुमार बच्चों को क़ुरआन-ए-मजीद पढ़ाया और सही तलफ़्फ़ुज़ से अदा करने पर ताकीद किया करती थीं।

उनके पोते व्क़ास ख़ुरशीद मुरब्बी सिलसिला जो हैं वह यह कहते हैं कि हमेशा दुआ और पढ़ाई की तरफ़ तवज्जा दिलाती थीं और जमाअत की तारीख़ के हवाले से कहानियों के माध्यम से बच्चों को जमाअत की तारीख़ सिखाती थीं ताकि उनकी बेहतर रंग में तर्बीयत हो।

उनकी एक पोती कहती हैं कि दादी अम्मां को नौ पोतीयां नसीब हुईं। उन्होंने न केवल हम लड़कियों की तर्बीयत की कि हम लजना इमाइल्लाह की ख़ादिमा बने बल्कि अदब और आदाब और सही पर्दा कैसे करना है, घर की देख-भाल, मेहमान-नवाज़ी, सिलाई, उर्दू में लिखना पढ़ना इन सारी चीज़ों के बारे में हमारे लिए मुस्तक़िल राहनुमा थीं। जैसे जैसे हम बालिग़ हुए उन्होंने हमें अपने शौहरों और ससुराल वालों के अच्छा ख़्याल रखने की तरग़ीब दी और बहुत ख़ुश होतीं जब हम उन्हें बताते कि हमने अपने ससुराल के साथ वक़्त गुज़ारा है। इन फ़रायज़ के साथ उन्होंने हमें अच्छी तरह से तालीम याफ़ता बनने और कैरीयर बनाने की तरग़ीब भी दी। सालगिरा न मनाने जैसी जो ग़ैर इस्लामी चीज़ें हैं इन चीज़ों पर मज़बूती से क़ायम थीं लेकिन उन्होंने सालगिरा और ख़ास अवसरों को यादगार भी बनाया क्योंकि वे हमेशा हमें एक फ़ैमिली के तौर पर इकट्ठे हमद-ओ-सना की नज़्म पढ़ना और बाजमाअत दुआओं के लिए कहती थीं। फिर यह कहती हैं कि कैनेडा में बतौर अहमदी मुस्लमान आप हमारी परवरिश का एक लाज़िमी हिस्सा थीं और उन्होंने हमें इस बारे में भी सिखाया कि हमने अपने ईमान और मग़रिबी समाज को किस तरह हम-आहंग तरीक़े से मुतवाज़िन करना है।

तो यह है माओं और बुज़ुर्गों का काम जो नई नसल को सँभालने के लिए ज़रूरी है।

कि नई नसल की किस तरह तर्बीयत करनी है, उनको दीन भी सिखाना है और इस समाज में रहते हुए बग़ैर किसी एहसास कमतरी के उनको अपने आपको एडजस्ट करने की तरफ़ तवज्जा भी दिलानी है।

अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए। उनकी औलाद को उनकी नसल को नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ फ़रमाए।

★ ★ ★

पृष्ठ01 का शेष

चल पड़ी है। ख़ुदा के काम आहिस्तगी के साथ होते हैं।

अगर हमारे पास कोई दलील भी नहीं होती, तो फिर भी मुस्लमानों को चाहिए था कि दीवाना-वार फिरते और तलाश करते कि मसीह अब तक क्यों नहीं आया। यह कसर-ए-सलीब के लिए आया है। इन को चाहिए नहीं था कि इस को अपने झगड़ों के लिए बुलाते। इस का काम कसर-ए-सलीब है और इसी की ज़माना को ज़रूरत है और इसी वास्ते उसका नाम मसीह मौऊद है। अगर मुल्लानों को नौ इन्सान की बहबूदी मद्द-ए-नज़र होती तो वे कदापि ऐसा नहीं करते। इन को सोचना चाहिए था कि हमने फ़तवे लिख कर क्या बना लिया है। जिसको ख़ुदा ने कहा कि हो जावे उसको कौन कह सकता है कि न हो वे। ये हमारे मुख़ालिफ़ भी हमारे नौकर-चाकर हैं कि पूर्व और पश्चिम में हमारी बात को पहुंचा देते हैं। अभी हमने सुना है कि गोलड़े वाला पीर एक किताब हमारे ख़िलाफ़ लिखने वाला है अतः हम ख़ुश हुए कि उसके मुरीदों में से जिसको ख़बर न थी, उसको भी ख़बर हो जाएगी और उन को हमारी किताबों के देखने के लिए एक तहरीक पैदा होगी।

(मल् फ़ूज़ात, भाग प्रथम पृष्ठ 358 से 360 मुद्रित 2018 क़ादियान)

★ ★ ★

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING
OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

पृष्ठ02 का शेष

उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उनके पास तशरीफ़ लाए और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि उसकी क़सम जिसके क़बज़ा क़ुदरत में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जान है कि मैं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के रोने की आवाज़ को हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के रोने की आवाज़ से अलग पहचान रही थी जबकि मैं अपने हुजरे में थी। अर्थात उस वक़्त जब हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु की प्राणांत होने की दशा थी, तो ये दोनों रो रहे थे। मैं अपने हुजरे में थी और वह ऐसे ही थे जैसे कि अल्लाह ने फ़रमाया है رُحَمَآءُ بَيۡنَهُمۡ(अल् फ़तह : 30) अर्थात आपस में एक दूसरे से बेहद प्रेम करने वाले हैं। (उद्धरित मस्नद अहमद बिन हम्बल, भाग 8 पृष्ठ 256 से 259 मसनद आयशा रिवायत 25610 अलेमुल क़ुतुब 1998 ई.)

सुलह हुदैबिया के हवाले से लिखा है जैसा कि पिछले ख़ुतबात में वर्णन हो चुका है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक स्वप्न देखा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने सहाबा के साथ बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहे हैं। इस स्वप्न की बिना पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चौदह सौ सहाबा की जमईयत के साथ ज़ुल्कादा 6 हिज्री के शुरू में रविवार के दिन सुबह के समय मदीना से उमरह की अदायगी के लिए रवाना हुए। (उद्धरित सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पृष्ठ 749-750)

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मालूम हुआ कि कुफ़्फ़ार-ए-मक्का ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मक्का में दाख़िल होने से रोकने की तैयारी कर ली है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा से मश्वरा माँगा। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मश्वरा देते हुए अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! हम तो केवल उमरे के लिए आए हैं हम किसी से लड़ने नहीं आए। मेरी राय यह है कि हम अपनी मंज़िल की तरफ़ जाएं। अगर कोई हमें बैतुल्लाह से रोकने की कोशिश करेगा तो हम उससे लड़ाई करेंगे।

(उद्धरित सब्लुल हुदा वर्रिशाद, भाग 5 पृष्ठ 37 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

सुलेह हुदैबिया के अवसर पर जब क़ुरैश की तरफ़ से आपसी बात चीत के लिए वफ़ूद का सिलसिला शुरू हुआ तो उर्वा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बात चीत करने लगे। उर्वा ने कहा मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) बताओ तो सही अगर तुमने अपनी क़ौम को पूर्णता नाबूद कर दिया तो क्या तुमने अरबों में से किसी अरब के विषय में सुना है जिसने तुमसे पहले अपने ही लोगों को तबाह कर दिया हो? और अगर दूसरी बात हो अर्थात क़ुरैश ग़ालिब हुए तो अल्लाह की क़सम मैं तुम्हारे साथियों के चेहरों को देख रहा हूँ जो इधर उधर से इकट्ठे हो गए हैं वे भाग जाऐंगे और तुम्हें छोड़ देंगे। यह सुनकर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उर्वा बिन मसऊद से निहायत कठोर शब्दों में कहा कि जाओ जाओ जा कर अपने बुत लात को चूमते फिरो अर्थात उसकी पूजा करो। इस पर उर्वा ने पूछा यह कौन है? लोगों ने कहा अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो। उर्वा ने कहा देखो उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है कि अगर तुम्हारा मुझ पर एक एहसान न होता जिसका मैं ने अभी तक तुम्हें बदला नहीं दिया तो मैं इस का तुम्हें उत्तर देता। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का एहसान यह था कि एक विषय में उर्वा पर दियत जब वाजिब हुई तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने दस गाभन ऊंटनियों के साथ उसकी सहायता की थी। बहरहाल उर्वा ने यह कहा और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बातें शुरू कर दें।

सुलह हुदैबिया के अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ क़ुरैश का अनुबंध हो रहा था। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे कि मैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और मैंने कहा क्या आप सच-मुच अल्लाह के नबी नहीं हैं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्यों नहीं। मैंने कहा क्या हम हक़ पर नहीं हैं और हमारा दुश्मन झूठ पर? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्यों नहीं। मैंने अर्ज़ किया तो फिर हम अपने दीन के विषय में अपमान जनक शर्तें क्यों मानें? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं अल्लाह का रसूलुल्लाह हूँ और मैं उसकी ना-फ़रमानी नहीं करूँगा। वह मेरी मदद करेगा। अर्थात अगर मैं शर्तें मान रहा हूँ तो यह अल्लाह तआला के हुक्म की ना-फ़रमानी नहीं है। फ़रमाया कि वह मेरी मदद करेगा। मैंने कहा अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा। क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम से नहीं कहते थे कि हम जल्द बैतुल्लाह में पहुँचेंगे और इस का तवाफ़ करेंगे? फ़रमाया: निसंदेह मैंने कहा था और क्या मैंने तुम्हें यह बताया था कि हम बैतुल्लाह इसी वर्ष पहुँचेंगे? आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा। मैंने यह तो नहीं कहा था कि हम इसी साल बैतुल्लाह पहुँचेंगे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते थे। मैंने कहा नहीं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तो फिर बैतुल्लाह ज़रूर पहुँचोगे और उसका तवाफ़ भी करोगे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते थे यह सुन कर मैं अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया और मैंने अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो! क्या हक़ीक़त में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के नबी नहीं हैं? उन्होंने कहा क्यों नहीं। मैंने कहा क्या हम हक़ पर नहीं हैं और हमारा दुश्मन झूठ पर? उन्होंने कहा क्यों नहीं। मैंने कहा हम अपने दीन के विषय में अपमानित करने वाली शर्त क्यों स्वीकार करें? इस वक़्त अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा हे ख़ुदा के बन्दे! निसंदेह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूलुल्लाह हैं और रसूलुल्लाह अपने रब की ना-फ़रमानी नहीं किया करता और अल्लाह ज़रूर उनकी सहायता करेगा। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने तक़रीबन वही शब्द दोहराए जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाए थे। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमाया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तै किए वादे को मज़बूती से थामे रहो। अल्लाह की क़सम! आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम निसंदेह हक़ पर हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं मैं ने कहा कि क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम से नहीं कहते थे कि हम ज़रूर बैतुल्लाह में पहुँचेंगे और उसका तवाफ़ करेंगे। अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा अवश्य। क्या आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी बताया था कि तुम इसी वर्ष वहां पहुँचोगे? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं इस पर मैंने कहा नहीं। तो इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा फिर तुम ज़रूर वहां पहुँचोगे और उसका तवाफ़ ज़रूर करोगे। ज़ोहरी ने कहा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते थे कि मैं ने इस ग़लती की वजह से बतौर कफ़्फ़ारा कई नेक अमल किए।(उद्धरित सही बुख़ारी, किताब بَابُ الشُّرُوطِ فِي الْجِهَادِ وَالْمُصَالَحَةِ مَعَ أَهْلِ الْحَرْبِ وَ كِتَابَةِ الشُّرُوطِ, हदीस नम्बर 2731-2732)(उद्धरित उम्दतुल कारी, भाग 14 पृष्ठ 16 दारुल दारुल अहया तुर्रास अरबी बेरूत) यह बुख़ारी में से लिया गया है।

इसी सुलेह हुदैबिया की तफ़सीलात का वर्णन करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा है कि उर्वा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ बात चीत शुरू की। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने अपनी वही तक़रीर दोहराई जो इस से क़बल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बुदेल बिन वर्का के सामने फ़र्मा चुके थे। उर्वा उसूलन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की राय के साथ सहमत था परन्तु क़ुरैश की सिफ़ारत का हक़ अदा करने और उनके हक़ में ज़्यादा से ज़्यादा शर्तें सुरक्षित कराने के उद्देश्य से कहने लगा। हे मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)! अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस जंग में अपनी क़ौम को मालिया-मेट कर दिया तो क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अरबों में किसी ऐसे आदमी का नाम सुना है जिसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहले ऐसा ज़ुलम ढाया हो लेकिन अगर बात अस्त-व्यस्त हुई अर्थात क़ुरैश को ग़लबा हो गया तो ख़ुदा की क़सम! मुझे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इर्द गिर्द ऐसे मुँह नज़र आ रहे हैं कि उन्हें भागते हुए देर नहीं लगेगी और ये सब लोग आपका साथ छोड़ देंगे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो जो उस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ही बैठे थे उर्वा के ये शब्द सुन कर क्रोध से भर गए और फ़रमाने लगे जाओ जाओ और लात को, अर्थात उनका बुत जो लात है, उसको चूमते फिरो। क्या हम ख़ुदा के रसूलुल्लाह को छोड़ जाऐंगे? लात बुत जो था वे क़बीला बनू सक़ीफ़ का एक प्रसिद्ध बुत था। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का मतलब यह था कि तुम लोग बुतपरस्त हो और हम लोग ख़ुदा-परस्त हैं तो क्या ऐसा हो सकता है कि तुम तो बुतों की ख़ातिर सब्र-ओ-सबात दिखाओ और हम ख़ुदा पर ईमान लाते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को छोड़ कर भाग जाएं। उर्वा ने तैश में आकर पूछा यह कौन व्यक्ति है जो इस तरह मेरी बात काटता है? लोगों ने कहाया अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो। अबू बकर का नाम सुनकर उर्वा की आँखें शर्म से नीची हो गईं। कहने लगा हे अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अगर मेरे सिर पर तुम्हारा एक भारी एहसान न होता। यहां भी यही वर्णन किया है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक दफ़ा उसका क़र्ज़ अदा करके उसकी जान छुड़ाई थी। तो ख़ुदा की क़सम मैं तुम्हें उस वक़्त बताता कि ऐसी बात का जो तुमने कही है किस तरह जवाब देते हैं।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, पृष्ठ 757-756)

बुख़ारी के एक हवाले में वर्णित है कि सुलह हुदैबिया के अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ क़ुरैश का अनुबंध हो रहा था और शर्तें तै पा चुकी थीं। उस वक़्त हज़रत अबू जिंदल जो कि सुहेल बिन अम्र के बेटे थे अपनी ज़ंजीरों में लड़खड़ाते हुए आए। सुहेल बिन अम्र ने जो मक्का की तरफ़ से बतौर सफ़ीर

आए थे उसने उनको वापस करने का मुतालिबा किया। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस को क़ुरैश को वापस कर दिया। (उद्धरित सही बुख़ारी, किताब بَابُ الشُّرُوطِ فِي الْجِهَادِ وَالْمُصَالَحَةِ، हदीस नम्बर 2731-2732)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस की कुछ तफ़सील से वर्णन किया है और इस में इस वाक़िया का भी वर्णन है जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बेहस करते हुए किया था कि अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला के सच्चे नबी हैं तो फिर हम यूं नीचे लग कर बात क्यों करें। बहरहाल इसकी तफ़सील यह है अर्थात अबू जिंदल के साथ ज़्यादती हो रही है इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह बात की।

"मुस्लमान ये दृश्य देख रहे थे" अब्बू जिंदल से ज़्यादती का "और मज़हबी ग़ैरत से उनकी आँखों में ख़ून उतर रहा था रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने सहम कर ख़ामोश थे। आख़िर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से न रहा गया। वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीब आए और काँपती हुई आवाज़ में फ़रमाया। क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा के सच्चे रसूलुल्लाह नहीं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ हाँ ज़रूर हूँ। उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा क्या हम हक़ पर नहीं और हमारा दुश्मन झूठ पर नहीं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ हाँ ज़रूर ऐसा ही है। उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा तो फिर हम अपने सच्चे दीन के मामले में ये अपमान क्यों सहन करें? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की हालत को देख कर संक्षिप्त शब्दों में फ़रमाया। उमर! मैं ख़ुदा का रसूलुल्लाह हूँ और मैं ख़ुदा की इच्छा को जानता हूँ और इसके ख़िलाफ़ नहीं चल सकता और वही मेरा सहायक है परन्तु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की तबीयत का समुद्र हर क्षण बढ़ रहा था। कहने लगे क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हम से यह नहीं फ़रमाया था कि हम बैतुल्लाह का तवाफ़ करेंगे? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ मैंने ज़रूर कहा था परन्तु क्या मैंने यह भी कहा था कि यह तवाफ़ ज़रूर इसी साल होगा? उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा नहीं ऐसा तो नहीं कहा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तो फिर इंतिज़ार करो। तुम इंशा अल्लाह ज़रूर मक्का में दाख़िल होगे और काअबा का तवाफ़ करोगे। परन्तु इस जोश के आलम में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की तसल्ली नहीं हुई लेकिन चूँकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का विशेष प्रभाव था इस लिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वहां से हट कर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आए और उनके साथ भी इसी किस्म की जोश की बातें कीं। और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी इसी किस्म के उत्तर दिए परन्तु साथ ही हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने नसीहत के रंग में फ़रमाया देखो उम्र सँभल कर रहो। रसूलुल्लाह-ए-ख़ुदा की रिकाब पर जो हाथ तुमने रखा है उसे ढीला न होने देना क्योंकि ख़ुदा की क़सम! यह व्यक्ति जिसके हाथ में हमने अपना हाथ दिया है बहरहाल सच्चा है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि उस वक़्त में अपने जोश में ये सारी बातें कह तो गया परन्तु बाद में मुझे सख़्त शर्मिंदगी हुई और मैं तौबा के रंग में इस कमज़ोरी के असर को धोने के लिए बहुत से नफ़ली आमाल बजा लाया। अर्थात सदक़े किए। रोज़े रखे। नफ़ली नमाज़ें पढ़ीं और ग़ुलाम आज़ाद किए ताकि मेरी इस कमज़ोरी का दाग़ धुल जाए।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, पृष्ठ 767-768)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सुलह हुदैबिया के वाक़ियात वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब ख़ाना काबा के तवाफ़ के लिए तशरीफ़ ले गए तो कुफ़्फ़ार ने ख़बर पा कर अपने एक सरदार को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ रवाना किया कि वह जा कर कहे कि इस साल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तवाफ़ के लिए न आएं। वह सरदार आपके पास पहुंचा और बातचीत करने लगा। बात करते वक़्त उसने आपके पवित्र बालों को हाथ लगाया कि आप इस दफ़ा तवाफ़ न करें और किसी अगले साल पर स्थगित कर दें।" हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि" एशीया के लोगों में दस्तूर है कि जब वे किसी से बात मनवाना चाहते हों तो मिन्नत के तौर पर दूसरे की दाढ़ी को हाथ लगाते हैं या अपनी दाढ़ी को हाथ लगा कर कहते हैं देखो! मैं बुज़ुर्ग हूँ और क़ौम का सरदार हूँ मेरी बात मान जाओ। इस लिए उस सरदार ने भी मिन्नत के तौर पर आपकी दाढ़ी को हाथ लगाया। यह देख कर एक सहाबी आगे बढ़े और अपनी तलवार का हत्था मार कर सरदार से कहा अपने नापाक हाथ पीछे हटाओ। सरदार ने तलवार का हत्था मारने वाले को पहचान कर कहा तुम वही हो जिस पर मैंने अमुक अवसर पर एहसान किया था। यह सुनकर वह सहाबी ख़ामोश हो गए और पीछे हट गए। सरदार ने फिर मिन्नत के तौर पर आपकी दाढ़ी को हाथ लगाया। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हमें इस सरदार के इस तरह हाथ लगाने पर सख़्त ग़ुस्सा आ रहा था परन्तु उस वक़्त हमें कोई ऐसा व्यक्ति नज़र नहीं आता था जिस पर इस सरदार का एहसान न हो और उस वक़्त हमारा दिल चाहता था काश! हम में से कोई ऐसा व्यक्ति होता जिस पर इस सरदार का कोई एहसान न हो। इतने में एक व्यक्ति हम में से आगे बढ़ा जो सिर से पांव तक ख़ुद और ज़िरा में लिपटा हुआ था और बड़े जोश के साथ सरदार से सम्बोधित हो कर कहने लगा हटा लो अपना नापाक हाथ। ये हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो थे।" जिन्हों ने यह कहा था। "सरदार ने जब उनको पहचाना तो कहा हाँ मैं तुम्हें कुछ नहीं कह सकता क्योंकि तुम पर मेरा कोई एहसान नहीं है।"

(हिन्दुस्तानी उलझनों का आसान तरीन हल, अनवारुल उलूम, भाग 18 पृष्ठ 560)

ज़ुल क़ादा छः हिज्री में सुलह हुदैबिया के अवसर पर जब सुलह नामा लिखा गया तो इस अनुबंध की दो नक़लें तैयार की गईं और बतौर गवाह के फ़रीक़ैन के अत्यधिक प्रतिष्ठित व्यक्तिगणों ने उन पर अपने हस्ताक्षर किए। मुस्लमानों की तरफ़ से हस्ताक्षर करने वालों में से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत साद बिन अबी वक्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अबू उबैदा बिन जराह रज़ियल्लाहु अन्हु थे। यह सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि से उद्धरित है।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि अज़ हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम. ए.,पृष्ठ 769)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि इस्लाम में सुलह हुदैबिया से बड़ी कोई और फ़तह नहीं है।

(सब्लुल हुदा वर्रिषाद, भाग 5 पृष्ठ 64 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

सरय्या हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो बनू फ़ज़ारह की तरफ़, इसके वर्णन में लिखा है कि यह सरय्या 6 हिज्री में हुआ है। बनू फ़ज़ारह नजद और कुरा की वादी में आबाद थे। (फरहंग सीरत, पृष्ठ 64 ज़वार-ए-अकेडेमी कराची 2003 ई.)

तबक़ातुल कुबरा में और सीरत इब्ने हश्शाम में लिखा है कि यह सरय्या हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु की कमान में भेजा गया था। (उद्धरित अल् तब्क़ातुल कुबरा, भाग 2 पृष्ठ 69 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2017 ई.)(उद्धरित सीरतुन नब्विय्या ले इब्ने हश्शाम, पृष्ठ 875 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

लेकिन सही मुस्लिम और सुंन अबी दाऊद की हदीस से पता चलता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को इस सरय्या का अमीर निर्धारित फ़रमाया था। इस लिए सही मुस्लिम की रिवायत में है कि इय्यास बिन सलमा वर्णन करते हैं कि मेरे पास मेरे पिता ने वर्णन किया वह कहते हैं कि हमने फ़ज़ारह क़बीले से जंग की और हमारे अमीर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हम पर अमीर बनाया था।

(सही मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सेर, باب التنفيل و فداء المسلمين بالاساری، हदीस 4573) (सुंन अबी दाऊद, किताब अल्जिहाद, باب الرخصة فی المدرکین یفرق بینهم, हदीस 2697)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी इस सरय्या का वर्णन करते हुए यह वर्णन फ़रमाया है कि "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु काअएक दस्ता हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की कमान में बनू फज़ाराह की तरफ़ रवाना फ़रमाया। यह क़बीला उस वक़्त मुस्लमानों के ख़िलाफ़ नुकसान पहुचना या जंग आदि के लिए तैयार था और इस दस्ता में सलमा बिन अक्वा भी शामिल हुए जो प्रसिद्ध तीर-अंदाज़ और दौड़ने में विशेष योगता रखते थे। सल्मा बिन अक्वा वर्णन करते हैं कि हम सुबह की नमाज़ के क़रीब उस क़बीला की क़रार गाह के पास पहुंचे और जब हम नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हमें हमले का हुक्म दिया। हम क़बीला फ़ज़ारा से लड़ते हुए उनके चशमा तक जा पहुंचे और मुशरिकीन के कई आदमी मारे गए जिसके बाद वे मैदान छोड़ कर भाग निकले और हमने कई आदमी क़ैद कर लिए। सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि भागने वाले लोगों में से एक पार्टी बच्चों और औरतों की थी जो जल्दी जल्दी एक क़रीब की पहाड़ी की तरफ़ बढ़ रही थी। मैंने उनके और पहाड़ी के मध्य तीर फेंकने शुरू कर दिए। जिस पर यह पार्टी भयभीत हो कर खड़ी हो गई और हमने उन्हें क़ैद कर लिया। इन क़ैदियों में एक बूढ़ी महिला भी थी जिसने अपने ऊपर सुर्ख़ चमड़े की चादर ओढ़ रखी थी और उसकी एक ख़ूबसूरत लड़की भी उसके साथ थी। मैं इन सबको घेर कर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास ले आया और आप रज़ियल्लाहु अन्हु यह लड़की मेरी निगरानी में दे दी। फिर जब हम मदीना में आए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से यह लड़की ले ली और उसे मक्का भिजवा कर उसके बदले में कुछ मुस्लमान क़ैदियों की रिहाई हासिल की जो मक्का वालों के पास क़ैद थे।"(सीरत सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पृष्ठ 716-717)जिन को मक्का वालों ने क़ैद किया हुआ था। इस लड़की के बदले उनको छुड़वाया।

ग़ज़वा-ए-ख़ैबर के बारे में वर्णन है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुहर्रम के महीने में सात हिज्री में ख़ैबर की तरफ़ रवाना हुए। ख़ैबर एक नख़लिस्तान है जो मदीना मुनव्वरा से एक सौ चौरासी किलो मीटर उत्तर में स्थित है। यहां एक आतिश-फ़िशानी चटानों का सिलसिला है। यहां यहूद के बहुत से क़िले थे जिनमें से कुछ के निशान अब भी बाक़ी हैं। इन क़िलों को मुस्लमानों ने ग़ज़वा-ए-ख़ैबर में

फ़तह किया था। यह इलाक़ा निहायत ज़रख़ेज़ और यहूद का सबसे बड़ा केंद्र था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने बाद मदीना पर सिबाब बिन उर्फ़ा ग़िफ़ारी को अमीर निर्धारित किया। (तारीख़ तिब्री भाग 3 पृष्ठ 144 ذکر الاحداث الکائنة فی سنة سبع من الهجرة غزوة خیبر बेरूत 2002 ई.)(एटलस सीरत नब्वी अज़ डाक्टर शौक़ी अबू ख़लील, पृष्ठ 330 दारुस्सलाम) (फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 117 ज़वार एकेडेमी कराची 2003 ई.)

ख़ैबर में क़िलों का घेराव दस से अधिक रातें रहा।

(मवाहिबुल दुनिया, भाग 1 पृष्ठ 517 ग़ज़वा-ए-ख़ैबर अल्मकतब इस्लामी 2004 ई.)

हज़रत बुरेदा रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आधे सिर का दर्द हो जाता था तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक या दो दिन बाहर तशरीफ़ नहीं लाते थे। अतः जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खेबर में उतरे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दर्द शक़ीक़ा हो गया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों में तशरीफ़ नहीं लाए। सिर दर्द होती है जिसे शक़ीक़ा, migraine कहते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को कतीबा के क़िलों की तरफ़ भेजा। अतः उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा लिया और दुश्मन के मुक़ाबले में डट गए और सख़्त युद्ध किया। फिर वापस आ गए और फ़तह नहीं हुई हालाँकि उन्होंने बहुत कोशिश की थी। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा। उन्होंने भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा लिया और सख़्त क़िताल किया और यह पहले क़िताल से भी ज़्यादा सख़्त था। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी वापस लौट आए लेकिन फ़तह नहीं हुई।

(सब्लुल हुदा वर्रिशाद, भाग 5 पृष्ठ 124 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

इतिहास और जीवनी की अधिकतर पुस्तकों में यही मिलता है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को एक बाद एक अमीर लश्कर बनाया गया था लेकिन उनके हाथ से क़िला फ़तह नहीं हो सका। जबकि एक किताब है जिसका नाम "सय्यदना सिद्दीक़-ए-अकबर" है। यह लाहौर से फरवरी 2010 ई. में प्रकाशित हुई थी। हमारी तहक़ीक़ करने वालों ने इसको देखकर मुझे लिखा है। इस में मुसन्निफ़ ने लिखा है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ से वह क़िला फ़तह हुआ था लेकिन उसने कोई हवाला नहीं दिया। बहरहाल लेखक लिखता है कि एक क़िले की फ़तह के लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अमीर-ए-लश्कर हो कर गए जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ पर फ़तह हुआ। दूसरे क़िला पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को निर्धारित किया गया वह भी सफ़ल हुए। तीसरे क़िला को विजय करने की मुहिम मुहम्मद बिन मसलम रज़ियल्लाहु अन्हो के सपुर्द हुई लेकिन वह इस में सफ़ल नहीं हुए तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सुबह में ऐसे व्यक्ति को अमीर लश्कर बना कर इल्म दूँगा जो ख़ुदा और उस के रसूलुल्लाह को बहुत दोस्त रखता है और उस के हाथ से क़िला फ़तह होगा। इस लिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को इल्म प्रदान हुआ और क़िला विजय हुआ। (सय्यदना सिद्दीक़ अक़बर रज़ियल्लाहु अन्हो, पृष्ठ 49 अल्हाज हकीम ग़ुलाम नबी एम. ए, मुद्रित अदबियात लाहौर)

एक रिवायत ग़ज़वा-ए-ख़ैबर के हवाले से वाक़दी की है। क्योंकि लोग उसकी तारीख़ भी पढ़ते हैं इसलिए वर्णन कर देता हूँ लेकिन ज़रूरी नहीं कि यह सौ फ़ीसद सही हो। बहरहाल वह लिखता है कि ग़ज़वा-ए-ख़ैबर के अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक सहाबी हज़रत हुब्बाब बिन मुन्ज़िर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम! यहूद खजूर के दरख़्त को अपनी जवान औलाद से भी अधिक प्रिय रखते हैं। आप उनके खजूर के दरख़्त काट दें। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़जूरों के दरख़्त काटने का इरशाद फ़रमाया और मुस्लमानों ने तेज़ी से ख़जूरों के दरख़्त काटने शुरू किए। यहां तक जो यह वर्णन है वह सौ फ़ीसद काबिल-ए-क़बूल नहीं हो सकता लेकिन बहरहाल यह अगला हिस्सा सही लगता है। कहते हैं कि इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम! यक़ीनन अल्लाह ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ख़ैबर का वादा किया है और वह अपने वादे को पूरा करने वाला है जो उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किए हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खजूर के दरख़्त न काटें। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुनादी ने ऐलान किया और ख़जूरों के दरख़्त काटने से मना कर दिया।

(किताबुल मगाज़ी लिल् वाक्दी, भाग 2 पृष्ठ 120 बाब ग़ज़वा-ए-ख़ैबर दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2004 ई.)

जब अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ैबर पर फ़त्हा नसीब फ़रमाई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ैबर की एक ख़ास वादी कती को अपने रिश्तेदारों और अपने ख़ानदान की औरतों और मुस्लमानों के मर्दों और औरतों में तक़सीम फ़रमाया। इस अवसर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अन्य रिश्तेदारों के अतिरिक्त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को भी एक सौ वसक गल्ला और खजूरें अता फ़रमाई।

(उद्धरित सीरतुं नबविय्या ले इब्ने हश्शाम, पृष्ठ 707 वर्णन مقاسم خیبر و اموالها, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

एक वसक साठ साव का होता है और एक साव अढ़ाई किलो का होता है। (लुग़ात अल्हदीस, भाग 4 पृष्ठ 487 और भाग 2 पृष्ठ 648) इस तरह तक़रीबन तीन सौ पचहत्तर मन आहार बनता है जो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के हिस्सा में आया।

सरय्या हज़रत अबू बकर नजद के बारे में लिखा है कि नजद एक अर्ध रेगिस्तान लेकिन शादाब इलाक़ा है। इस में असंख्य वादियां और पहाड़ हैं। यह जुनूब में यमन, उत्तर में सहराए शाम और इराक़ तक जा पहुंचता है। इसके मग़रिब में सहराए हिजाज़ स्थित है। यह इलाक़ा सतह ज़मीन से बारह सौ मीटर बुलंद है। इस बुलंदी के आधार पर इस को नजद कहते हैं।

(फ़रहंग सीरत, पृष्ठ 297 ज़वार एकेडेमी कराची 2003 ई.)

नजद में बनू किलाब मुस्लमानों के ख़िलाफ़ इकट्ठे हुए तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को उनकी दमन के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वहां भेजा। यह सरय्या शाबान सात हिज्री में हुआ। हज़रत सलमा बिन अक्वा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को भेजा और हम लोगों पर उनको अमीर बनाया।

(سبل الهدیٰ والرشاد سریة ابوبکر الی بنی کلاب بنجد, भाग 6 पृष्ठ 131 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993)

अबू सुफ़ियान सुलह हुदैबिया के बाद जब मक्का आया तो उसके बारे में लिखा है कि सुलह हुदैबिया की ख़िलाफ़वर्ज़ी करते हुए जब बनू बक्र ने जो क़ुरैश के हलीफ़ थे, मुस्लमानों के हलीफ़ क़बीला बनू ख़ुज़ाह पर हमला किया और क़ुरैश ने हथियारों और सवारियों से बनू बकर की मदद भी की और सुलह हुदैबिया की शरायत का पास नहीं किया और बड़े ग़रूर और तकब्बुर से कह दिया कि हम किसी अनुबंध को नहीं मानते तो उस वक़्त अबू सुफ़ियान मदीना में आया और सुलह हुदैबिया के अनुबंध की तजदीद चाही। वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास गया लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस की किसी बात का उत्तर नहीं दिया। फिर वह अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गया और उनसे बात की कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बात करें लेकिन उन्होंने कहा कि मैं ऐसा नहीं करूँगा। फिर जैसा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन हो चुका है वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गया उन्होंने भी इंकार कर दिया। बहरहाल वह नाकाम लौटा। (उद्धरित सीरत हिशाम, पृष्ठ 734-735 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.) (शरह जरक़ानी, भाग 3 पृष्ठ 379-380 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

ग़ज़व-ए-फ़तह मक्का, इस ग़ज़वा को ग़ज़वा फ़तह इज़म भी कहते हैं।

(शरह जरक़ानी, भाग 3 पृष्ठ 386 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

ग़ज़वा-ए-मक्का रमज़ान आठ हिज्री में हुआ। तारीख़ तिब्री में वर्णन है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों को यात्रा की तैयारी का इरशाद फ़रमाया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने घर वालों से फ़रमाया मेरा सामान भी तैयार कर दो। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी बेटी हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास दाख़िल हुए, उनके घर गए। उस वक़्त हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामान को तैयार कर रही थीं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने पूछा हे मेरी बेटी! क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तुम्हें कुछ इरशाद फ़रमाया है कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सामान तैयार करो? उन्होंने कहा जी हाँ। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने पूछा तुम्हारा क्या ख़्याल है कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरादा कहाँ जाने का है? हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा मैं बिल्कुल नहीं जानती। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों को बता दिया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का की तरफ़ जा रहे हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें तुरंत इंतिज़ाम करने और तैयार होने का इरशाद फ़रमाया और दुआ की कि हे अल्लाह क़ुरैश के जासूसों को और उनके मुख़बिरों को रोके रख यहां तक कि हम उन लोगों को उनके इलाक़ों में अचानक पा लें। इस पर लोगों ने तैयारी शुरू कर दी।

(तारीख़ अल् तिब्री لابی جعفر محمد بن جریر طبری ذکر الخبر عن فتح مکه भाग 3 पृष्ठ 166 दारुल फ़िकर बेरूत 2002 ई.)

इस वाक़िया की मज़ीद वज़ाहत करते हुए सीरत हलबी्या में लिखा है कि जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से इस्तिफ़सार फ़र्मा रहे थे तो उसी वक़्त रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां तशरीफ़ ले आए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आपसे पूछा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यात्रा का इरादा फ़रमाया

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 24 March 2022 Issue No.12

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ। तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया तो फिर मैं भी तैयारी करूँ? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हाँ। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने दरयाफ़त किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने कहाँ का इरादा फ़रमाया है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क़ुरैश के मुक़ाबला का परन्तु साथ ही यह फ़रमाया कि अबू बकर इस बात को अभी गुप्त ही रखना। उद्देश्य आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों को तैयारी का हुक्म दिया परन्तु आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको इस से बे-ख़बर रखा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कहाँ जाने का इरादा है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क्या क़ुरैश और हमारे मध्य अभी अनुबंध और सुलह की मुद्दत बाक़ी नहीं है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ परन्तु उन्होंने ग़द्दारी की है और अनुबंध को तोड़ दिया है परन्तु मैं ने तुमसे जो कुछ कहा है इसको गुप्त ही रखना।

एक रिवायत में यूं वर्णन हुआ है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किसी तरफ़ रवानगी का इरादा फ़रमाया है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा शायद आप बनू असफ़रा रोमीयों की तरफ़ कूच का इरादा फ़र्मा रहे हैं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नहीं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया तो क्या फिर नजद की तरफ़ कूच का इरादा है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नहीं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा फिर शायद आप क़ुरैश की तरफ़ रवानगी का इरादा फ़र्मा रहे हैं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! परन्तु आपके और उनके मध्य तो अभी सुलह नामा की मुद्दत बाक़ी है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या तुम्हें मालूम नहीं कि उन्होंने बनू काब अर्थात बनू ख़ुज़ाअ के साथ क्या-किया है? इस के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दिहात और इर्द-गिर्द के मुस्लमानों में संदेश भिजवाए और उनसे इरशाद फ़रमाया कि जो व्यक्ति अल्लाह तआला और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है वह रमज़ान के महीना में मदीना हाज़िर हो जाए। अतः आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ऐलान के अनुसार क़बायल अरब मदीना आने शुरू हो गए। जो क़बायल मदीना पहुंचे उनमें बनू असलम, बनू ग़फ़ार, बनू मुज़ैन्ना, बनू अशजा और बनू जुहेयना थे। इस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह दुआ की कि हे अल्लाह क़ुरैश के मुख़बिरों और जासूसों को रोक दे यहां तक कि हम उन लोगों पर उनके इलाक़े में अचानक जा पहुंचीं। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने समस्त रास्तों पर निगरानी करने वाली जमातें बिठा दीं ताकि हर आने जाने वाले के विषय में पता रहे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया कि जो कोई भी अंजान व्यक्ति तुम्हारे पास से गुज़रे तो उसे रोक देना ताकि क़ुरैश को मुस्लमानों की तैयारी का इलम न हो सके।

(सीरातुल हल्बिया भाग 3 पृष्ठ 107-108 दारुल क़ुतुब इल्मिया, बेरूत 2002)

इस वाक़िया की तफ़सील वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी एक बीवी से कहा कि मेरा यात्रा का सामान बांधना शुरू करो। उन्होंने यात्रा क सामान बांधना शुरू किया और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि मेरे लिए सत्तू इत्यादि या दाने इत्यादि भून कर तैयार करो। ईसी किस्म की ग़िज़ाएँ उन दिनों में होती थीं। इस लिए उन्होंने मिट्टी इत्यादि फटक कर दानों से निकालनी शुरू की। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो घर में बेटी के पास आए और उन्होंने यह तैयारी देखी तो पूछा आयशा यह क्या हो रहा है? क्या रसूलुल्लाह अल्लाह किसी यात्रा की तैयारी में हैं? कहने लगीं यात्रा की तैयारी ही मालूम होती है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यात्रा की तैयारी के लिए कहा है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस पर कहा कोई लड़ाई का इरादा है? उन्होंने कहा कि मुझे तो कुछ पता नहीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि मेरा सामान यात्रा का तैयार करो और हम ऐसा कर रहे हैं। दौ तीन दिन के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और कहा देखो तुम्हें पता है ख़ुज़आ के आदमी इस तरह आए थे और फिर बताया कि यह वाक़िया हुआ है और मुझे ख़ुदा ने इस वाक़िया से पहले से ख़बर दे दी थी कि उन्होंने ग़द्दारी की है और हमने उनसे अनुबंध किया हुआ है। अब यह ईमान के ख़िलाफ़ है कि हम डर जाएं और मक्का वालों की बहादुरी और ताक़त देख कर उनके मुक़ाबला के लिए तैयार न हो जाएं। तो हमने वहां जाना है तुम्हारी क्या राय है? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा। हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आपने तो उनसे अनुबंध किया हुआ है और फिर वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अपनी क़ौम है। अर्थ यह था कि क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी क़ौम को मारेंगे? हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। हम अपनी क़ौम को नहीं मारेंगे। अनुबंध तोड़ने वालों को मारेंगे। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा। तो उन्हों ने कहा। बिसमिल्लाह में तो रोज़ दुआएं किया करता था कि यह दिन नसीब हो और हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त में कुफ़्फ़ार से लड़ें। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अबू बकर बड़ा नरम तबीयत का है परन्तु सच्चा कथन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़बान से ज़्यादा जारी होता है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तैयारी करो। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इर्द-गिर्द के क़बायल को ऐलान भिजवाया कि हर व्यक्ति जो अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह पर ईमान रखता है वह रमज़ान के आरंभिक दिनों में मदीना में जमा हो जाए। इस लिए लश्कर जमा होने शुरू हुए और कई हज़ार आदमियों का लश्कर तैयार हो गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लड़ने के लिए तशरीफ़ ले गए। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम निकले तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे ख़ुदा! मैं तुझसे दुआ करता हूँ कि तू मक्का वालों के कानों को बहरा कर दे और उनके जासूसों को अंधा कर दे। न वे हमें देखें और न उनके कानों तक हमारी कोई बात पहुंचे। इस लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम निकले मदीना में सैंकड़ों मुनाफ़िक़ मौजूद थे लेकिन दस हज़ार का लश्कर मदीना से निकलता है और कोई इत्तिला तक मक्का में नहीं पहुँचती।

(उद्धरित सैर-ए-रुहानी 7) अनवारुल उलूम, भाग 24 पृष्ठ 260 से 262) ये अल्लाह तआला के काम थे।

तबक़ात इब्ने साद में लिखा है कि मुस्लमानों का क़ाफ़िला इशा के समय मर्रुज़ोहरान में उतरा मर्रु ज़ोहरान मक्का से मदीना के रास्ते पर पच्चीस किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। अर्थात पच्चीस किलो मीटर मक्का से दूर था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा को हुक्म दिया तो उन्होंने दस हज़ार जगह आग रोशन की। क़ुरैश को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रवानगी की ख़बर नहीं पहुंची। वह दुखी थे क्योंकि उन्हें यह डर था आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन से जंग करेंगे। यह ख़्याल था उनका। ख़बर तो नहीं पहुंची लेकिन यह ख़्याल था कि क़ुरैश की जंग अब ज़रूर होगी। इस बात का उनको ग़म था। बहरहाल लगता है यहां ग़लत लिखा गया है रवानगी की ख़बर उनको पहुंच गई। यहां पहुंचने के बाद ख़बर पहुंची होगी। तो जब यह क़ाफ़िला वहां ठहर गया और दस हज़ार जगहों पर आग रोशन हो गई तो क़ुरैश ने अबूसुफ़ियान को भेजा कि वह हालात मालूम करे। उन्होंने कहा अगर तू मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिले तो हमारे लिए उनसे अमान ले लेना। अब्बू सुफ़ियान बिन हरब, हकीम बिन हिज़ाम और बुदील बिन वर्का रवाना हुए। जब उन्होंने लश्कर देखा तो सख़्त परेशान हो गए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस रात पहरे पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को निगरान निर्धारित फ़रमाया। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने अबूसुफ़ियान की आवाज़ सुनी तो पुकार कर कहा कि अबू हनज़ला, यह अबू सुफ़ियान का उपनाम है, उसने कहा लब्बैक। यह तुम्हारे पीछे किया है? अबू सुफ़ियान ने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि तुम्हारे पीछे किया है? उन्होंने कहा ये दस हज़ार के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे पनाह दी। उसे और उस के दोनों साथियों को आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश किया। तीनों इस्लाम ले आए। (अल् तब्कातुल कुबरा, भाग 2 पृष्ठ 102-103 ग़ज़वा रसूलुल्लाह आमुल फ़तह दारुल क़ुतुब इल्मिया 2017 ई.) (एटलस सीरत नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, पृष्ठ 396 मक्तबा दारुल सलाम)

अभी इसका तसलसुल आगे जारी है। इंशा-ए-अल्लाह आइन्दा वर्णन होगा।

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad